# प्राणिशास्त्र अनुभाग

(राज्य संग्रहालय, लखनऊ)

राज्य संग्रहालय, लखनऊ

स्थापना वर्ष 1863

आनन्द कुमार सिंह

अल शाज़ फ़ात्मी

# प्राणिशास्त्र अनुभाग

(राज्य संग्रहालय, लखनऊ)

राज्य संग्रहालय, लखनऊ

स्थापना वर्ष 1863

# प्राणिशास्त्र अनुभाग

(राज्य संग्रहालय, लखनऊ)

प्रकाशक : राज्य संग्रहालय लखनऊ

प्रकाशन वर्ष : 2019

आवरण पृष्ठ चित्र :
एशियाई बब्बर शेर
मिस्र की ममी
शुतुरमुर्ग का अण्डा
लाल पाण्डा
भारतीय गैण्डा
साइबेरियन सारस
सितारा मछली

मूल्य : ₹ 200.00 (दो सौ रुपये)

मुद्रक :
प्रकाश पैकेजर्स,
257, गोलागंज
लखनऊ–226018
फोन नं. : 0522–2200425

# अनुक्रमणिका

साइबेरियन सारस

**लक्ष्मी नारायण चौधरी**
मंत्री
दुग्ध विकास, अल्पसंख्यक कल्याण,
मुस्लिम वक्फ, हज, संस्कृति एवं
धर्मार्थ कार्य, उत्तर प्रदेश


कार्या.- 92 बी, मुख्य भवन, उ.प्र. सचिवालय
दूरभाष- 0522- 2238989/ 2213293


दिनांक-......................................

# संदेश

भारत में संग्रहालयों के क्रमिक विकास में राज्य संग्रहालय, लखनऊ का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ देश की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों का अमूल्य संग्रह संग्रहीत है। संग्रहालय में देश –विदेश के पर्यटक भ्रमण पर आते हैं एवं प्रदर्शित कलाकृतियों का अवलोकन कर ज्ञानार्जन करते हैं। संग्रहालय के विभिन्न कर्तव्यों यथा–अधिग्रहण, संरक्षण, परिरक्षण, व्याख्या एवं शोध के अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण कर्तव्य यह भी है कि यह उन लोगों तक भी पहुँचे, जो स्वयं संग्रहालय तक नहीं पहुँच सकते। जन सामान्य तक संग्रहालय के पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम संग्रहालय के विविध प्रकाशन होते हैं।

मुझे अत्यन्त हर्ष है कि, राज्य संग्रहालय, लखनऊ में संग्रहीत प्राकृतिक विज्ञान के अनमोल संग्रह पर आधारित एक पुस्तिका तैयार की जा रही है। इस पुस्तिका में प्राकृतिक विज्ञान की चयनित अद्‌भुत कलाकृतियों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई गई हैं। यह पुस्तिका प्रकृति प्रेमियों के अतिरिक्त कॉलेज के छात्र/छात्राओं तथा विश्वविद्यालय के शोधार्थियों के लिए निश्चित रूप में लाभदायक सिद्ध होगी। इसके लिए मैं राज्य संग्रहालय, लखनऊ के निदेशक डॉ0 आनन्द कुमार सिंह एवं सहायक निदेशक (प्राणिशास्त्र) श्रीमती अल शाज़ फ़ात्मी को बधाई देता हूँ।

( लक्ष्मी नारायण चौधरी )

प्राणिशास्त्र अनुभाग में संरक्षण कार्य

जितेन्द्र कुमार
आई.ए.एस.
प्रमुख सचिव।

अर्द्धशा०प०सं०-1026
संस्कृति, भाषा, उ0प्र0पु0सं0 एवं सामान्य प्रशासन
उत्तर प्रदेश शासन
कक्ष सं० 64, नवीन भवन, सचिवालय,
दूरभाष सं0 0522-2239298 फैक्स : 2235453
लखनऊ दिनांक : 29-03-2019
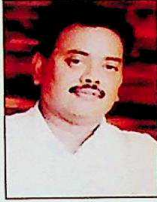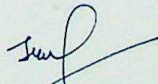
# संदेश

नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं गौरवशाली परम्परा से परिचित कराना प्रत्येक जागृत एवं गतिशील समाज का नैतिक दायित्व है। हमारे त्यौहार और रीति–रिवाज प्रकारांतर से अपने इसी दायित्व की पूर्ति के माध्यम रहे हैं। उ0 प्र0 सरकार के स्तर पर भी इस दिशा में निरन्तर प्रयास किये जाते रहे हैं, जिसके लिए मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक व प्राकृतिक धरोहरों को विभिन्न माध्यमों से अधिग्रहीत कर संरक्षित एवं प्रदर्शित करने के उद्देश्य से विविध विषयों पर आधारित संग्रहालय स्थापित किये गये हैं। राज्य संग्रहालय, लखनऊ की स्थापना वर्ष 1863 में हुई, जो देश के प्राचीनतम संग्रहालयों में से एक है। इस बहुउद्देश्यीय संग्रहालय में देश–विदेश की सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरों का एक उत्कृष्ट संग्रह है।

संग्रहालय भ्रमण पर आने वाले दर्शक और पर्यटक अपने साथ स्मृति रूप में संग्रहालय के कुछ प्रकाशन भी ले जाने के इच्छुक होते हैं, क्योंकि कम समय में सभी प्रदर्शित कलाकृतियों के विषय में समुचित जानकारी प्राप्त करना संभव नहीं हो पाता है।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि संग्रहालय द्वारा दर्शकों की जिज्ञासा के अनुरूप राज्य संग्रहालय, लखनऊ के इस जनोपयोगी प्राणिशास्त्र संकलन पर आधारित पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तिका पाठकों के लिये निश्चित रूप से लाभप्रद सिद्ध होगी। इसके प्रकाशन के लिये मैं लेखक डॉ0 आनन्द कुमार सिंह, निदेशक एवं श्रीमती अल शाज़ फ़ात्मी, सहायक निदेशक (प्राणिशास्त्र) को बधाई और शुभकामना देता हूँ।

(जितेन्द्र कुमार)

राजगिद्ध

**शिशिर**
आई.ए.एस
विशेष सचिव

संस्कृति विभाग उ0प्र0 शासन
कक्ष सं0 707, बापू भवन
सचिवालय
दूरभाष सं0 0522–2237086

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि राज्य संग्रहालय, लखनऊ द्वारा प्राणिशास्त्र के अद्‌भुत संग्रह पर आधारित एक पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

राज्य संग्रहालय, लखनऊ की स्थापना लगभग 150 वर्ष पूर्व प्राणिशास्त्र संग्रह के माध्यम से एक म्यूनिसिपल संग्रहालय के रूप में हुई थी। सन् 1863 ई0 से आरम्भ हुई अपनी अनवरत विकास यात्रा के विविध चरणों से गुज़रते हुए राज्य संग्रहालय, लखनऊ एक बहुउद्‌देशीय संग्रहालय के रूप में आज अपने भव्य स्वरूप में प्रतिस्थापित है।

संग्रहालय द्वारा पर्यटकों एवं बुद्धिजीवियों के उपयोगार्थ इस परिचय पुस्तिका का प्रकाशन कराया जाना एक सराहनीय प्रयास है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि प्राणिशास्त्र संग्रह के अद्‌भुत कलाकृतियों पर आधारित यह पुस्तिका बुद्धिजीवी वर्ग के साथ सामान्य जन के लिये भी लाभप्रद सिद्ध होगी।

मैं इस पुस्तिका के प्रकाशन हेतु राज्य संग्रहालय, लखनऊ के निदेशक डॉ आनन्द कुमार सिंह एवं सहायक निदेशक (प्राणिशास्त्र) श्रीमती अल शाज़ फ़ात्मी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

Shishir

**(शिशिर)**

# आमुख

राज्य संग्रहालय, लखनऊ उ.प्र. का विशालतम बहुउद्देशीय संग्रहालय है, जिसकी स्थापना लगभग 150 वर्ष पूर्व कर्नल एब्बोट द्वारा 1863 में की गई थी। संग्रहालय अनौपचारिक शिक्षा का माध्यम होता है, जहाँ दर्शकों को कलाकृतियों के प्रदर्शन एवं व्याख्या द्वारा जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अन्य संग्रहालयों की भांति राज्य संग्रहालय लखनऊ द्वारा विविध प्रकाशन किये जाते हैं। इसी श्रृंखला में यह पुस्तिका संग्रहालय के प्राणिशास्त्र अनुभाग के अद्भुत संग्रह के विषय में जानकारी उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से प्रकाशित की गयी है। जिसमें संकलन के अमूल्य संग्रह में संग्रहीत कुछ दुर्लभ वन्यजीवों के Specimens पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तिका में प्रत्येक Specimen के बारे में संक्षेप में महत्वपूर्ण तथ्यों को बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। राज्य संग्रहालय का प्राणिशास्त्र संग्रह विविधताओं से परिपूर्ण है, जिसकी तुलना भारत के महत्वपूर्ण संग्रहों में की जाती है। राज्य संग्रहालय, लखनऊ के इस संग्रह में संग्रहीत जीवों में अधिकतर प्रजातियाँ भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 द्वारा संरक्षित हैं। इस पुस्तिका को क्लिष्ट हिन्दी अथवा शुद्ध वैज्ञानिक भाषा के स्थान पर सरल हिन्दी भाषा में तैयार किया गया है, ताकि यह पाठकों के प्रत्येक वर्ग/समूह हेतु उपयोगी सिद्ध हो सके। प्रस्तुत पुस्तिका में संग्रहालय के संक्षिप्त परिचय के साथ प्राणिशास्त्र अनुभाग में संग्रहीत अकशेरूकी तथा विभिन्न कशेरूकी वर्ग के जीव–जन्तुओं यथा स्पॉज, सितारा–मछली, ऑक्टोपस, बब्बर शेर, बंगाली लोमड़ी, सोहन चिड़िया, मगरमच्छ, एक सींग वाला भारतीय गैण्डा आदि की International Union for Conservation of Nature and Natural Rescurces (IUCN) तथा भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 के अनुसार संरक्षण की स्थिति, भोजन, प्रजनन, सामाजिक व्यवहार, शारीरिक बनावट, व्यवहार एवं निवास स्थान तथा अन्य सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारियों को समाहित किया गया है।

संग्रहालय द्वारा प्राणिशास्त्र संकलन के दुर्लभ Specimens एवं कलाकृतियों के सम्बन्ध में पाठकों को जानकारी उपलब्ध कराने का यह एक आरम्भिक प्रयास है। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तिका पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पुस्तिका के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले सम्बन्धित जनों के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं। पुस्तिका को इस रूप में प्रस्तुत करने में डॉ. मनोजनी देवी प्रकाशन सहायक, श्री प्रमोद कुमार फोटोग्राफर, श्री ज्ञान चन्द गोण्ड रसायन सहायक, श्री श्रवण कुमार कनिष्ठ सहायक, श्री अखिलेश कुमार, कनिष्ठ सहायक एवं श्री विजय कुमार मिश्र, कनिष्ठ सहायक का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। हम उनके प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं।

इस पुस्तिका का कोई भी भाग यदि पाठकों के लिये लाभकारी सिद्ध होगा तो हम अपने प्रयास में सफल होंगे। यद्यपि इसे प्रकाशित कराने में पूर्ण सावधानी बरती गई है, तथापि कोई त्रुटि शेष हो तो उसके लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

**अल शाज़ फ़ात्मी**
सहायक निदेशक (प्राणिशास्त्र)

**डॉ. आनन्द कुमार सिंह**
निदेशक

मार्च, 2019

# राज्य संग्रहालय, लखनऊ

राज्य संग्रहालय, लखनऊ भारत के प्राचीनतम संग्रहालयों में से एक है, जिसकी स्थापना म्यूनिसिपल संग्रहालय के रूप में वर्ष 1863 में कर्नल एब्बोट, तत्कालीन कमिश्नर (उत्तर पश्चिम प्रांत एवं अवध) द्वारा अपने निजी प्राकृतिक विज्ञान संग्रह से की गई थी। आरम्भ में यह संग्रहालय प्राकृतिक धरोहरों को संग्रहीत करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था, परन्तु आगे चल कर इसमें पुरातत्त्व, मुद्रा, सज्जाकला, कलात्मक वस्तुएँ आदि विभिन्न संग्रहों को भी समाहित किया गया।

आरम्भ में संग्रहालयों का उद्देश्य ऐतिहासिक एवं कला की वस्तुओं का संग्रह एवं संरक्षण करना तथा उन्हें किसी प्रकार जनता को दिखा देना मात्र था। अन्य संग्रहालयों की भांति, राज्य संग्रहालय की स्थापना भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए आज से लगभग 150 वर्ष पूर्व हुई। समय के साथ संग्रहालयों के उद्देश्य बहुमुखी हुए, इसी श्रृंखला में राज्य संग्रहालय, लखनऊ ने अधिग्रहण (Acquisition), अभिलेखीकरण (Documentation), प्रदर्शन (Display), व्याख्या (Interpretation), एवं शोध (Research) के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों को संग्रहालय के संग्रह का हिस्सा बनाया। इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिये संग्रहालय निरन्तर प्रयत्नशील रहा है।

वर्तमान में संग्रहालय में कुल 5 प्रमुख संग्रह, प्राणिशास्त्र, पुरातत्त्व, मुद्रा, सज्जाकला एवं कलात्मक वस्तुओं के रूप में स्थापित हैं, जिसमें देश एवं विदेश की अद्भुत एवं बहुमूल्य कलाकृतियां संग्रहीत हैं। इसे समय–समय पर दर्शकों के अवलोकनार्थ अस्थाई एवं स्थाई प्रदर्शनी के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है।

राज्य संग्रहालय, लखनऊ के वर्तमान भवन का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने 12 मई, 1963 को अपने कर कमलों से किया। उद्घाटन के समय नवीन भवन के भूमि तल पर केवल प्राणिशास्त्र वीथिकाएं सज्जित थीं। बाद में निर्माण कार्य और आगे बढ़ा एवं संग्रहालय में धातु–मूर्तियाँ, धातु–कला, चित्रकला, काष्ठकला, मुद्राएं, अस्त्र–शस्त्र, परिधान, पुरातत्त्व, वाद्ययन्त्र आदि संग्रह की वीथिकाएं स्थापित हुई।

यह संग्रहालय अनौपचारिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विभिन्न दर्शक समूहों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से समय–समय पर संग्रहालय द्वारा विविध विषयों पर अधिकृत विद्वानों के व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त संगोष्ठी, विचारगोष्ठी तथा कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं। शोधार्थियों, स्कूल/कालेज के छात्र/छात्राओं एवं आम जनमानस की कला में रूचि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संग्रहालय द्वारा निरन्तर कला अभिरूचि पाठ्यक्रम, क्ले–मॉडलिंग, कोलाज, चित्रकला, प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। स्कूली छात्र/छात्राओं एवं अन्य इसी प्रकार के समूहों को संग्रहालय में निःशुल्क भ्रमण की भी सुविधा उपलब्ध है। विशेष अवसरों यथा–विश्व संग्रहालय दिवस, विश्व धरोहर दिवस आदि पर संग्रहालय द्वारा आरक्षित संकलन में संग्रहीत कलाकृतियों को दर्शकों के अवलोकनार्थ अस्थाई वीथिका में प्रदर्शित किया जाता है।

राज्य संग्रहालय, लखनऊ शोध की दिशा में निरन्तर अग्रसर है। यह संग्रहालय छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर एवं अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ से शोध केन्द्र घोषित है। इन विश्वविद्यालयों में शोधार्थी अपना पंजीकरण कराकर राज्य संग्रहालय के निदेशक/सहायक निदेशक के सह पर्यवेक्षण में संग्रहालय की कलाकृतियों पर आधारित शोध कार्य कर सकते हैं।

देश के अन्य बड़े संग्रहालयों की भांति राज्य संग्रहालय, लखनऊ में भी एक उच्चकोटि का

पुस्तकालय उपलब्ध है, जिसमें कला, संस्कृति, इतिहास, प्राकृतिक विज्ञान, वास्तुशास्त्र, परिधान, चित्रकला, पुरातत्त्व, मुद्राशास्त्र आदि विषयों पर आधारित पुस्तकों, क्रोनिकल्स, गैज़ेटियर, जर्नल्स आदि का बहुमूल्य संग्रह है। यहाँ शोधार्थी निःशुल्क अध्ययन कर ज्ञानार्जन कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त संग्रहालय में रसायनशाला अनुभाग, छायाचित्र अनुभाग, अनुकृति अनुभाग, प्रकाशन अनुभाग आदि स्थापित हैं।

राज्य का सबसे वृहद, प्राचीन एवं महत्वपूर्ण संग्रहालय होने के कारण यहाँ उ.प्र. राज्य मुद्रा समिति का कार्यालय भी स्थित है एवं निदेशक, राज्य संग्रहालय, लखनऊ इसके पदेन सचिव हैं। प्रदेश भर से प्राप्त निखात निधियाँ इसी समिति के माध्यम से ट्रेज़र ट्रोव एक्ट 1878 के अन्तर्गत शासन की संस्तुति पर विभिन्न संस्थाओं में वितरित की जाती है।

**संग्रहालय का संग्रह :**

आरम्भ में राज्य संग्रहालय, लखनऊ केवल प्राणिशास्त्र के संग्रहों (specimens) को एकत्रित कर संरक्षित करता था। क्रमशः संग्रह का आकार व प्रकार बदला एवं विभिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ यथा–पुरातत्त्व, मानवशास्त्र, नृवंश विज्ञान, कलात्मक वस्तुएं, मुद्राशास्त्र, धातु मूर्तियाँ, अस्त्र–शस्त्र, चित्रकला, पाण्डुलिपि, परिधान, सोने–चांदी तथा अन्य बहुमूल्य धातुओं के गहनों का संग्रह भी संग्रहीत किया जाना प्रारम्भ हुआ।

संग्रहालय प्रारम्भ में केवल अधिग्रहण (Acquisition), परिरक्षण, (Preservation), संरक्षण (Conservation) एवं प्रदर्शन (Display) के कार्यों में संलिप्त था। परन्तु आगे चलकर वर्ष 1964 में एक विस्तृत अभिलेखीकरण नीति के अन्तर्गत संग्रहालय की सभी कलाकृतियों का अभिलेखीकरण (Documentation) किया गया। इसके तहत सम्पूर्ण संग्रह को पांच वृहद् भागों में वर्गीकृत किया गया।

1. प्राणिशास्त्र (Natural History)
2. पुरातत्त्व (Archaeology)
3. मुद्राशास्त्र (Numismatics)
4. सज्जाकला (Decorative Art)
5. कलात्मक वस्तुएं (Art Ware)

इस पुस्तिका के माध्यम से प्राणिशास्त्र अनुभाग का संक्षिप्त परिचय आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. **प्राणिशास्त्र संग्रह** (Natural History Section) :

राज्य संग्रहालय, लखनऊ में प्राकृतिक धरोहरों का एक अमूल्य संग्रह संग्रहीत है। आरम्भ में कलाकृतियों / specimens का संग्रह जंगली जानवरों के शिकार तथा चिड़ियाघरों एवं अन्य इसी प्रकार की संस्थाओं से उपहार स्वरूप प्राप्त specimens द्वारा होता था। इसके अतिरिक्त कभी–कभी सामान्य जनमानस एवं विद्वानों द्वारा अपने निजी संग्रह को भी संग्रहालय में दान स्वरूप भेंट किया जाता रहा है। आगे चलकर वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 के लागू होने के उपरान्त वन्यजीवों के शिकार पर सरकार द्वारा रोक लगा दी गई एवं इस अनुभाग में कलाकृतियों / specimens का अधिग्रहण बहुत कम हो गया। अनुभाग मुख्य रूप से निम्नलिखित 5 उप अनुभागों में वर्गीकृत है –

**(I) जीव–जन्तु संग्रह** (Zoological Collection)

राज्य संग्रहालय पशु–पक्षियों के संग्रह की दृष्टि से प्रदेश में ही नहीं अपितु देश में भी अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं विविध है। इस संग्रह में संग्रहीत अधिकतर पशु–पक्षी बहुत ही दुर्लभ प्रजाति के हैं। अनुभाग में कशेरूकी (Vertebrate) एवं अकशेरूकी (Invertebrate) दोनों ही प्रकार

के जीव–जन्तुओं के नमूने (specimens) विद्यमान हैं, जो कि अत्यन्त ही पुराने हैं एवं इनमें से कुछ की आयु 150 वर्ष से भी अधिक है।

इस संग्रह में खारे एवं स्वच्छ जल की मछलियों का एक दुर्लभ संग्रह है, जिसे सन् 1888 में श्री जेम्स मरे, प्रबन्धक, प्राकृतिक विज्ञान संस्थान, मुम्बई द्वारा दान स्वरूप संग्रहालय को भेंट किया गया था। आरम्भ में Bombay Natural History Society (BNHS), Mumbai की सहायता से कुछ specimens विशेष रूप से स्तनधारी प्रजातियों के संग्रह को संग्रहालय द्वारा क्रय किया गया।

प्राणिशास्त्र अनुभाग के प्रथम प्रभारी श्री ज्यॉर्ज रीड थे, जिन्होंने पक्षियों एवं सरिसृपों के अण्डों का एक बहुमूल्य निजी संग्रह संग्रहालय को दान स्वरूप भेंट किया।

अनुभाग में आद्र (Wet) एवं सूखी (Dry) दोनों प्रायोगिक विधियों द्वारा कलाकृतियाँ (specimens) संरक्षित हैं, जिसमें अकशेरूकी (Invertebrate) से लेकर स्तनधारी (Mammal) तक मौजूद हैं। यहाँ पशु–पक्षियों का अत्यन्त ही दुर्लभ संग्रह विद्यमान है, जिसमें गंभीर रूप से खतरे में (Critically Endangered), लुप्तप्राय (Endangered), असुरक्षित (Vulnerable), खतरे के करीब (Near threatened) एवं कम चिंताजनक (Least Concern), प्रजातियाँ सम्मिलित हैं।

अनुभाग में कोकोज़ फिंच के छोटे अण्डों से लेकर शुतुरमुर्ग एवं अन्य बड़े पक्षियों के अण्डों का एक अनोखा संग्रह है। इस संग्रह में लगभग 150 वर्ष पुराना Wet Preserved पशु–पक्षियों का एक अद्भुत संग्रह है। अनुभाग में विदेशी वन्यजीवों की सींग, अण्डे, खाल आदि भी अच्छी संख्या में संरक्षित हैं। मुख्यतः इन देशों का संग्रह अधिक है– भारत, आस्ट्रेलिया, चीन, दक्षिण अफ्रीका, मलेशिया, म्यांमार, निऊ गिनिया, पाकिस्तान, बंग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड आदि।

### (II) वनस्पति विज्ञान संग्रह (Botanical Collection)

इस संग्रह में Dry एवं Wet preserved प्रकार के पौधे हैं, जिसमें मुख्यतः कैलाश मानसरोवर, अण्डमान–निकोबार एवं भारत के अन्य भागों से प्राप्त पौधे हैं।

### (III) नृवंश विज्ञान संग्रह (Ethnographic Collection)

हाथी दांत, हड्डी, खाल, लकडी, पंख, सीप, सूत, धातु इत्यादि से बनी कलाकृतियों का एक अनोखा संग्रह संकलन में संरक्षित है। इसके अतिरिक्त कुछ जनजातियों के गहने भी संग्रहीत हैं।

### (IV) मिस्र की सभ्यता का संग्रह (Egyptian Collection)

लगभग 3000 वर्ष पुरानी एक ममी, जो 13 साल की लड़की की है दर्शकों का मुख्य आकर्षण है। इसे 1952 में ब्रिटिश नागरिक जे.एच. पॉटर से संग्रहालय द्वारा क्रय किया गया था। इसके अतिरिक्त एक ताबूत तथा विभिन्न धातुओं की बनी देवी–देवताओं की प्रतिमाएं भी अति महत्वपूर्ण हैं।

### (V) भू–विज्ञान संग्रह (Geological Collection)

इसमें कैलाश मानसरोवर से प्राप्त पत्थरों का एक महत्वपूर्ण संग्रह है, जिसमें विभिन्न दिशाओं से प्राप्त पत्थर हैं। इसके अतिरिक्त इलाहाबाद से प्राप्त उल्का पिण्ड भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

प्राणिशास्त्र संग्रह की कुछ दुर्लभ कलाकृतियों/specimens का संक्षिप्त विवरण आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। जिन कलाकृतियों/specimens को इस पुस्तिका में सम्मिलित नहीं किया गया है, यद्यपि वह कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। शेष कलाकृतियों/specimens को स्थान की कमी के कारण अगले अंक में सम्मिलित किया जायेगा।

# एक सींग वाला भारतीय गैण्डा

वैज्ञानिक नाम : ***Rhinoceros unicornis***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : मैमेलिया*
*ऑर्डर : पेरिसोडैक्टाइला*
*फ़ैमिली : राइनोसेरोटाइडी*
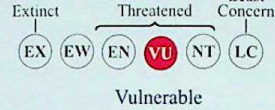
एक सींग वाले भारतीय गैण्डे 19 वीं शती ई0 पू0 तक भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी मैदानों में पर्याप्त संख्या में निवास करते थे, परन्तु अनियन्त्रित शिकार के कारण 20 वीं शती ई0 के अन्त तक इनकी जनसंख्या घटकर लगभग 200 रह गई। वर्तमान में यह केवल भारत एवं नेपाल के तराई क्षेत्र एवं पूर्वोत्तर भारत में पाया जाता है। भारत एवं नेपाल सरकार के अथक प्रयास से इनकी वर्तमान जनसंख्या 200 से बढ़कर 3500 हो चुकी है। इनकी मुख्य विशेषता नाक के ऊपर बाल के गुच्छों से बनी लगभग 8.25 इंच लम्बी सींग है, जिसका उपयोग पारम्परिक औषधियों में किया जाता है, इस कारण से इनका अवैध शिकार अधिक होता है। शरीर स्लेटी–भूरे रंग के मोटे चमड़े से ढ़का हुआ होता है, जिसमें कई सिलवटें पड़ी होती हैं। यह अधिकतर अकेले ही रहते हैं, परन्तु गर्मी के दिनों में नदी अथवा जलाशयों के किनारे कीचड़ में लोटते समय यह समूह में भी
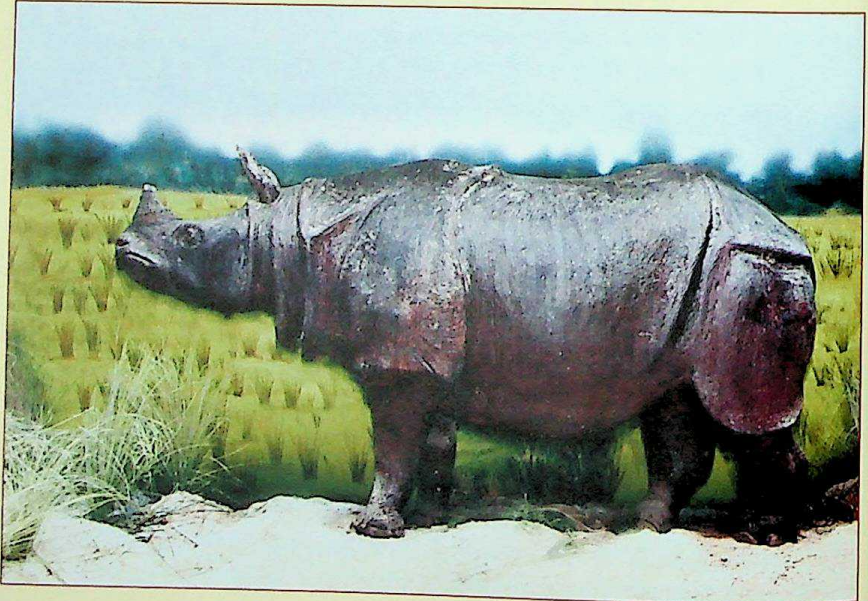
नज़र आते हैं। इनका कोई निश्चित क्षेत्र (Territory) नही होता है एवं नर द्वारा इसकी रक्षा भी नहीं की जाती है, बल्कि कई नरों का क्षेत्र (Territory) एक दूसरे से अतिच्छादित (Overlap) होता है। गैण्डे का भोजन मुख्य रूप से घास, पत्तियाँ, पेड़ों की टहनियाँ, फल–फूल एवं जलीय पौधे होते हैं। यघपि इनकी सींग के औषधीय महत्व का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है, परन्तु एशिया की परम्परागत औषधि प्रणाली में इसे वाजीकारक, बुखार, कैंसर एवं मिर्गी आदि रोग के लिये प्रयोग में लाया जाता है। जिस कारण अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबन्ध एवं संरक्षण के बावजूद इनका अवैध शिकार होता है। पूर्व की तुलना में इनका विस्तार क्षेत्र कम होने के कारण यह प्रजाति कुछ ही स्थानों तक सीमित हो चुकी है, जिसके फलस्वरूप इनकी अनुवांशिक विविधता में कमी आयी है, जो इनमें आन्तरिक प्रजनन अवसाद (Inbreeding depression) का एक कारण है। जलोढ़ मिट्टी के मैदानों का निरन्तर क्षरण एवं ह्रास होने के कारण इनके निवास स्थान समाप्त होते जा रहे हैं एवं इस प्रजाति की जनसंख्या केवल संरक्षित क्षेत्रों में ही व्याप्त है, जो इसकी निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या के लिये पर्याप्त नहीं है। उत्तर प्रदेश में यह दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में पाया जाता है। इनकी खाल अत्यन्त मज़बूत होने के कारण प्राचीन काल में तलवार के वार से बचाव के लिये इसकी ढाल बनायी जाती थी। इस बलवान पशु की ऊँचाई लगभग 5–6 फीट, नर का वज़न लगभग 2100 कि.ग्रा. तथा मादा का वज़न लगभग 1600 कि.ग्रा. तक होता है। इस प्रजाति में लगभग 15–16 माह के गर्भकाल के उपरान्त मादा प्रत्येक 2–3 वर्ष में एक शावक को जन्म देती है एवं शावक माता के साथ लगभग 2 साल तक रहता है। भारतीय गैण्डे की मादा 4–6 वर्ष में तथा नर लगभग 9 वर्ष में यौन परिपक्वता को प्राप्त करते हैं। प्रजनन काल में मादा को रिझाने के लिए नर एक विशेष प्रकार की ध्वनि निकालती है। माता शावकों के प्रति अत्यधिक सचेत एवं रक्षात्मक होती है एवं शावक साथ–साथ चलते हैं, जबकि पिता अकेले ही चलना पसन्द करता है तथा स्थानीय प्रादेशिक (local migratory) होता है।

## महत्वपूर्ण तथ्य

| | |
|---|---|
| ऊँचाई | : 5–6 फीट |
| लम्बाई | : 10–12.5 फीट (सिर से लेकर पूँछ तक) |
| वज़न | : नर– लगभग 2100 कि.ग्रा.<br>मादा–लगभग 1600 कि.ग्रा. |
| आयु | : लगभग 30–40 वर्ष |
| त्वचा / बालों का रंग | : स्लेटी / भूरा |
| आहार | : शाकाहारी |
| गर्भकाल | : 15–16 माह |
| निवास स्थान | : भारत के तराई क्षेत्र एवं पूर्वोत्तर के हिमालय की वादी। |

आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में संरक्षण की स्थिति : लुप्तप्राय (Vulnerable)

भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 की अनुसूची–I द्वारा संरक्षित

# बत्तख चोंचा/डकबिल

वैज्ञानिक नाम : ***Ornithorhynchus anatinus***

*फ़ाईलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : मैमेलिया*
*ऑर्डर : मोनोट्रीमेटा*
*फ़ैमिली : ऑर्निथोरिंकाइडी*
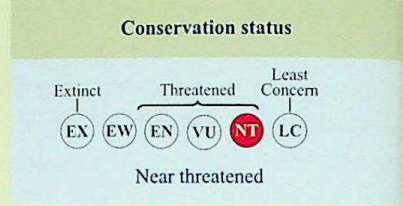
अण्डा देने वाले, थूथन के स्थान पर बत्तख जैसी चोंच, ऊदबिलाव जैसी पूँछ, झिल्लीदार पंजों वाले उभयचर प्रकृति के इस अद्भुत स्तनधारी ने वैज्ञानिकों को सदैव आकर्षित किया है। स्तनधारियों में यह एक विचित्र प्राणी है, जिसके नर के पैर में छोटा सा कांटा निकला हुआ होता है, जिससे यह विष छोड़ता है, जो शत्रुओं के लिये ख़तरनाक साबित होता है। यह छोटा एवं शर्मीला जीव है, जिसका शरीर चिपटा एवं थूथन के स्थान पर बत्तख के समान चोंच होती है। चोंच कड़ी न होकर अत्यन्त मुलायम होती है, जिस पर मौजूद हज़ारों अभिग्राहकों (Receptors) की सहायता से यह शत्रुओं तथा शिकार की उपस्थिति का पता लगा लेता है।

यह अधिकतर समय निद्रा एवं भोजन ढूंढने में लगाता है। बत्तख चोंचा पानी की तली में अपने भोजन की तलाश में अकेले विचरण करता रहता है। इसका भोजन मुख्य रूप से कीड़े–मकोड़े, घोंघा, सीपी एवं अन्य छोटे जलीय जीव होते हैं। यह एक बार में बहुत सारा भोजन अपने मुख के अन्दर एक थैली में भर लेता है एवं पानी की सतह पर आकर भोजन को खाता है।

दांतों के अभाव में चबाने में सहायता के लिए भोजन के साथ कुछ पत्थर के छोटे टुकड़े भी निगल लेता है। अत्यन्त शर्मीला होने के कारण यह केवल प्रातः एवं सायं काल में भोजन हेतु निकलता है तथा दिन भर बिल में छिपा रहता है। यह प्राणी पेट रहित होता है यही कारण है कि, इनमें भोजन का पाचन आँतों तथा ईसोफ़ेगस में ही हो जाता है। पक्षियों एवं सरीसृपों की भांति यह अण्डे देता है एवं स्तनधारियों की भांति यह अपने नवजात शिशु को स्तनपान कराता है। अन्य जलीय जीवों की तरह यह बहुत अच्छा तैराक है तथा एक बार में दो–तीन घंटे तक लगातार तैर सकता है। इसके मोटे फ़र एवं झिल्लीदार पंजे इसे अच्छा तैराक बनाते हैं, परन्तु ज़मीन पर यह बड़े ही हास्यापद ढंग से केवल उँगलियों की पोर पर चलता है। शरीर का फ़र (बाल) जलरोधक (वाटर प्रूफ़) होने के कारण कई घंटे तक पानी में रहने पर भी इसके शरीर की गर्मी बनी रहती है। अगले दोनों पैर बहुत मज़बूत होते हैं, जिनकी सहायता से यह आसानी से तैरता है एवं पैने पंजो की सहायता से बिल खोदता है। तैरने के दौरान इसकी आँख, नाक एवं कान सभी बन्द रहते हैं, परन्तु यह अपनी चोंच पर स्थित अभिग्राहकों की सहायता से शिकार एवं शत्रु की उपस्थिति की जानकारी प्राप्त कर लेता है।

आस्ट्रेलिया महाद्वीप के इस प्राणी का पूरा शरीर ऊपर की ओर से गहरे भूरे रंग एवं अन्दर की ओर से हल्के भूरे रंग के बाल से ढका हुआ होता है। यह बाल काफी घने होते हैं एवं शरीर को गर्म बनाये रखने में सहयोग प्रदान करते हैं। वयस्क बत्तख चोंचा की लम्बाई 40–60 से0मी0 होती है तथा नर प्रायः मादा से बड़ा होता है। यद्यपि प्रकृति में यह जीव अधिक संख्या में विद्यमान हैं, तथापि इनके जीवन चक्र के विषय में कम जानकारी उपलब्ध है। प्रजनन काल के अतिरिक्त नर और मादा एक दूसरे से अलग रहते हैं एवं प्रायः 4 वर्षों में यह यौन परिपक्वता को प्राप्त करते हैं। मादा लगभग दो सप्ताह के गर्भकाल के बाद 2–3 अण्डे अपनी बिल में देती है। जिसे लगभग 10 दिन सेने के बाद उसमें से बच्चे निकलते हैं, जो कि माता का स्तनपान करते हैं। यह बच्चे प्रथम 14 सप्ताह तक प्रतिदिन 20 गुना बढ़ते हैं। अद्यतन वैज्ञानिक शोध इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि, यह आधुनिक स्तनधारियों के विकास में प्रथम जीव है एवं इसे स्तनधारी तथा सरिसृप के बीच की कड़ी भी माना जाता है। इनका विकास आज से लगभग 11 करोड़ वर्ष पूर्व डायनासोर के लुप्त होने से पूर्व हुआ था।

### महत्वपूर्ण तथ्य

लम्बाई : 40–60 से0मी0 (शरीर)
8.5–15 से0मी0 (पूँछ)
बालों का रंग : भूरा
वज़न : 0.8–2.5 कि.ग्रा.
गर्भकाल : 2–3 सप्ताह
निवास स्थान : आस्ट्रेलिया एवं तस्मानिया
आयु : 10 वर्ष प्राकृतिक वातावरण में।
17 वर्ष चिड़ियाघर आदि में।

आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में संरक्षण की स्थिति : खतरे के करीब (Near threatened)

# धारीदार लकड़बग्घा

वैज्ञानिक नाम : ***Hyaena hyaena***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : मैमेलिया*
*ऑर्डर : कॉर्निवोरा*
*फ़ैमिली : हाईनाइडी*

**Conservation status**

Extinct — Threatened — Least Concern

EX EW EN VU **NT** LC
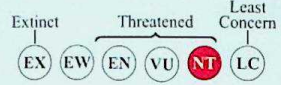
Near threatened

धारीदार लकड़बग्घे की प्रजाति उत्तर–पूर्व अफ्रीका, मध्य एशिया एवं भारतीय उपमहाद्वीप के सवान्ना के मैदानों, जंगलों, रेगिस्तानों एवं पहाड़ों पर निवास करती है। मूलरूप से मुर्दाख़ोर होने के साथ यह कभी–कभी अपना शिकार स्वयं भी करता है। जंगली जानवरों के अतिरिक्त मौका मिलने पर यह इन्सानों पर भी आक्रमण करते हैं एवं रातों में अक्सर छोटे बच्चों को भी उठा ले जाते हैं। एक नर केवल एक ही मादा के साथ प्रजनन में भाग लेता है तथा नर एवं मादा दोनों शावकों को पालने में अपना योगदान देते हैं। यह निशाचर जीव रात के अंधेरे में अपने शिकार पर निकलता है एवं उजाला
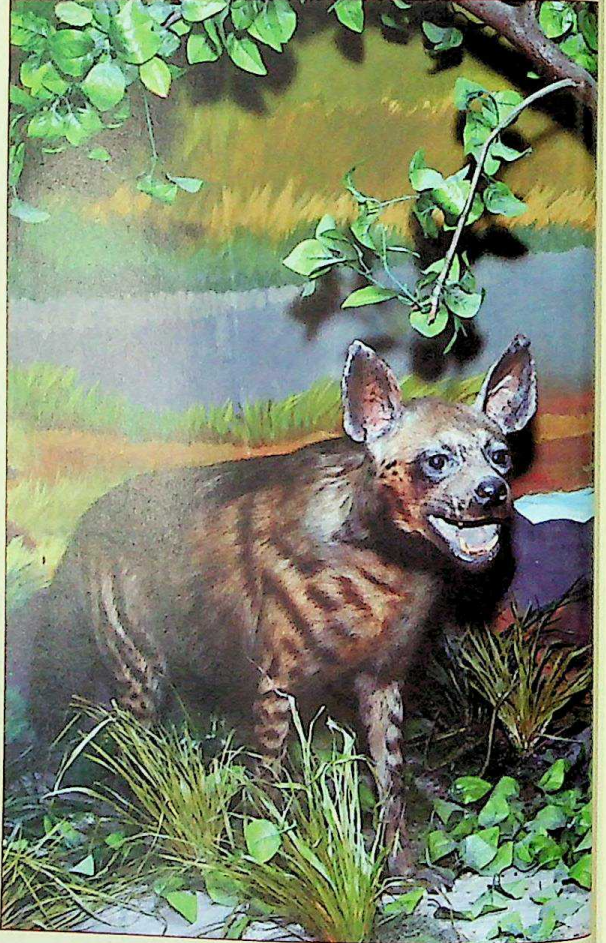
होने से पूर्व अपनी मांद में वापस लौट जाता है। शिकार पर अधिकार प्राप्त करने के लिए स्वयं से शक्तिशाली प्रजाति के जीवों से भी यह अक्सर लड़ाई कर लेता है एवं खतरा होने पर मरने का अनूठा नाटक भी करता है। यह मुख्यतः मरे हुए जानवरों को खाकर वातावरण शुद्ध करता है। शरीर पर घने बाल, काली एवं भूरी–स्लेटी धारियों में व्यवस्थित होते हैं। यद्यपि धारियों की सघनता ऋतु के अनुसार घटती–बढ़ती रहती है। धारीदार लकड़बग्घे की 5 प्रजातियाँ एशिया एवं अफ्रीका में पायी जाती हैं।

यदि इसके सामाजिक एवं क्षेत्रीय व्यवहार की बात करें तो यह 1–7 के समूह में रहने वाला निशाचर प्राणी है। प्रायः एक समूह का कोई एक विशेष क्षेत्र (territory) न होकर कई समूहों के क्षेत्र एक–दूसरे से अतिच्छादित (overlap) होते हैं। एक समूह अपने क्षेत्र को दूसरे समूह से पृथक करने के लिए anal gland में उपस्थित hyaena butter (एक प्रकार की सुगंन्ध) को घास, मिट्टी एवं पत्थरों पर लगा देते हैं, जो अन्य समूहों के लिये प्रवेश निषिद्ध का संकेत होता है। यह प्राणी विशेष प्रकार की ''हुआ–हुआ'' की आवाज़ एवं इन्सानों के हँसने जैसी ध्वनि निकालता है। प्रजनन का समय क्षेत्रों के अनुसार जनवरी से फरवरी अथवा अक्टूबर से नवम्बर के मध्य होता है। इस प्रजाति में गर्भकाल लगभग तीन माह का होता है तथा मादा दो माह तक शावकों को स्तनपान कराती है। प्राकृतिक वातावरण में लकड़बग्घा लगभग 12 वर्षों तक एवं प्राणी उद्यान आदि में लगभग 25 वर्षों तक जीवित रह सकता है। एक वयस्क लकड़बग्घे की ऊँचाई 60–80 से0मी0 तथा वज़न 20–50 कि.ग्रा. तक होता है। प्राकृतिक निवास स्थानों में क्षरण एवं ह्रास के कारण इनकी जनसंख्या में निरन्तर कमी आ रही है।

## महत्वपूर्ण तथ्य

| | | |
|---|---|---|
| ऊँचाई | : | 60–80 से0मी0 |
| लम्बाई | : | लगभग 80–130 से0मी0 (शरीर)<br>लगभग 20–40 से0मी0 (पूँछ) |
| प्रजनन | : | एक बार में 3–4 शावक |
| वज़न | : | 25–40 कि.ग्रा. |
| आहार | : | सड़े–गले एवं मरे हुए जानवरों का मांस, छोटे जानवरों का शिकार। |
| शरीर का रंग | : | बादामी बालों के ऊपर स्लेटी–भूरी धारी। |
| गर्भकाल | : | लगभग 3 माह |
| आयु | : | लगभग 12 वर्ष जंगलों में।<br>लगभग 25 वर्ष प्राणि उद्यान आदि में। |
| निवास स्थान | : | घास के मैदान, अर्द्धशुष्क / शुष्क जंगल, रेगिस्तान एवं पहाड़। |

आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में संरक्षण की स्थिति : खतरे के करीब (Near threatened)
भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 की अनुसूची–III द्वारा संरक्षित।

# बंगाली लोमड़ी

वैज्ञानिक नाम : ***Vulpes bengalensi***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : मैमेलिया*
*ऑर्डर : कार्नीवोरा*
*फ़ैमिली : कैनाईडी*
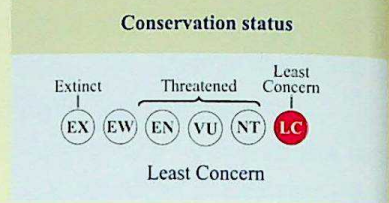
बंगाली लोमड़ी/भारतीय लोमड़ी भारतीय उपमहाद्वीप की निवासी है। यद्यपि य
प्रजाति इस पूरे क्षेत्र में फैली हुई है, तथापि इनकी जनसंख्या घास के मैदानों और झाड़िय
के लगातार क्षरण के कारण कम होती प्रतीत हो रही है, परन्तु इसमें बहुत तीव्रता से गिराव
नहीं आई है। अतः इसे आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में कम चिंताजनक (Least Concern
श्रेणी में स्थान मिला है। भारत में यह हिमालय की तलहटी से लेकर नेपाल होते हुए दक्षिण
प्रायद्वीप के अन्तिम छोर तक पायी जाती है, परन्तु यह प्रजाति भारत के पूर्वी एवं पश्चिम
घाट से पूर्ण रूप से अनुपस्थित है। इसका कारण वहां व्याप्त घने जंगल हैं, क्योंकि य
मुख्य रूप से अर्द्धशुष्क घास के मैदानों को वरीयता देती है, जहाँ चूहों की जनसंख्या अधि

होती है। इनकी खोह / मांद की गहराई सतह से 2–3 फीट तक होती है। माता–पिता दोनों शावक का लालन–पालन करते हैं तथा माता एक महीने तक इन्हें स्तनपान कराती है। जीवन पर्यन्त यह जोड़े में रहते हैं तथा वर्ष में केवल एक बार प्रजनन करते हैं। इनके मुख्य शत्रु इंसान, भेड़िया, आवारा कुत्ते, एवं अन्य बड़े मांसाहारी जीव हैं। बंगाली लोमड़ी सर्वाहारी होती है तथा मुख्य रूप से चूहों, सांप, चिड़ियों, कीड़े–मकोड़े, अण्डे, फल आदि को अपना भोजन बनाती है। यद्यपि यह जोड़े में रहती है, परन्तु शिकार अकेले ही करती है। अपने पैने पंजो की मदद से मांद बनाकर 51–53 दिनों के गर्भकाल के बाद दिसम्बर से मार्च के मध्य एक बार में 3–6 शावकों को जन्म देती है। यद्यपि अभी तक ऐसा कोई व्यवसायिक कारण सामने नहीं आया है, जिस हेतु इनका शिकार किया जाता हो, परन्तु स्थानीय लोगों द्वारा पारम्परिक औषधि एवं जादू–टोना हेतु इसके दांत, हड्डियाँ, पूँछ, पंजे, चमड़े आदि के लिए अवैध शिकार किया जाता है। भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 के अन्तर्गत इस प्रजाति के शिकार पर पूर्ण रूप से प्रतिबन्ध है। बंगाली लोमड़ी को भारतीय उपमहाद्वीप के खुले जंगलों, संरक्षित क्षेत्रों एवं चिड़ियाघरों आदि में देखा जा सकता है।

यह प्रजाति आमतौर पर पालतू जानवरों की तरह ही इन्सानों से डरती नहीं है और प्रायः इन्सानों की बस्ती में आ जाती है, जिससे यह इन्सानों का शिकार बन जाती है। यही कारण है कि, अत्यधिक अवैध शिकार होने से इनका जीवन खतरे में है। आपस में बात करने के लिये यह कटकटाने एवं रोने जैसी आवाज़ निकालती है, जो कि इनके क्षेत्र को बताने में भी सहायता प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त यह गुर्राने, रिरियाने, कराहने, भौंकने आदि की आवाज़ भी निकालती है। प्रजनन काल में नर प्रातः काल, सायं काल एवं रात में तेज आवाज़ में चिल्लाता है। यह गोबर अथवा विशेष प्रकार की मूत्र की गंध से अपने क्षेत्र (territory) को चिन्हित करते हैं, जिससे कोई अन्य नर उस क्षेत्र में प्रवेश न करे। यदि कोई बाहरी नर किसी दूसरे के क्षेत्र में प्रवेश कर लेता है, तो उसे स्थानीय नर से युद्ध का सामना करना पड़ता है।

### महत्वपूर्ण तथ्य

| | | |
|---|---|---|
| ऊँचाई | : | लगभग 1.5 फीट |
| लम्बाई | : | शरीर की लम्बाई लगभग 20 इंच<br>पूँछ की लम्बाई 9–12 इंच |
| वज़न | : | लगभग 3–4 कि.ग्रा. |
| बालों का रंग | : | स्लेटी–भूरा |
| आहार | : | मांसाहारी |
| गर्भकाल | : | 51–53 दिन |
| निवास स्थान | : | भारतीय उपमहाद्वीप |
| आयु | : | लगभग 10 वर्ष |

आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में संरक्षण की स्थिति : कम चिंताजनक (Least Concern)
भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 की अनुसूची–II द्वारा संरक्षित

# लाल पाण्डा

वैज्ञानिक नाम : ***Ailurus fulgens***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : मैमेलिया*
*ऑर्डर : कॉर्नीवोरा*
*फ़ैमिली : एल्यूराइडी*
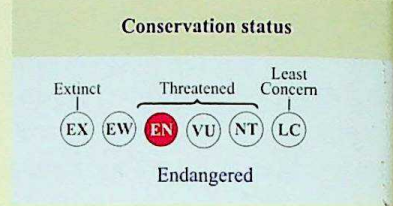
पालतू बिल्ली से थोड़ा बड़ा भालू के समान झबरीले बालों वाला यह प्राणी भारत, नेपाल म्यांमार एवं चीन के पर्वतीय क्षेत्र के शीतोष्ण जंगलों में निवास करता है एवं इसका लगभग 5( प्रतिशत निवास स्थान हिमालय की उत्तरी पर्वत माला में है। लम्बे घने बालों वाली लगभग 18 इं लम्बी पूँछ को यह ठंड के समय अपने चारों ओर लपेट लेता है। अधिकतर समय यह पेड़ों पर सोत हुए गुज़ारते हैं तथा सायं एवं प्रातः काल में सक्रिय होते हैं। अपनी अन्य प्रजातियों की भांति यह केवल बांस पर निर्भर नहीं होते हैं, बल्कि फल–फूल, अण्डों आदि को भी भोजन के रूप में लेते हैं मुख्य रूप से यह शाकाहारी जीव है, जिसका नामकरण नेपाली शब्द "पोन्या" बांस खाने वाले जीव से हुआ है। यह बहुत ही शर्मीले होते हैं एवं प्रजनन काल को छोड़कर सदैव अकेले ही रहना पसंद करते हैं। इनके वर्गीकरण में विरोधाभास है, इसे विशालकाय पाण्डा एवं रकून दोनों का ही करीबी माना जाता है, अद्यतन स्थिति के अनुसार इसे एक पृथक फैमिली एल्यूराइडी में रखा गया है।

इनके निवास स्थान में क्षरण, वनों की कटाई, बासों की कटाई, मुलायम गरम फ़र (बालों) के लिये इनका शिकार आदि इनकी जनसंख्या में कमी के मुख्य कारण हैं। जंगलों में हिरन एवं जंगली सुअर को पकड़ने के लिये बिछाये गये जाल में फंसकर भी इनकी अक्सर मृत्यु हो जाती है। वर्तमान में लगभग 10,000 लाल पाण्डा जंगलो में निवास करते हैं। आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट के अनुसार इन्हें लुप्तप्राय (Endangered) श्रेणी में रखा गया है। नेपाल में लाल पाण्डा की 38 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। इनके संरक्षण हेतु स्थानीय गांव वालों के सहयोग से WWF (World Wide Fund for Nature) निरन्तर प्रयासरत् है।

### महत्वपूर्ण तथ्य

| | | |
|---|---|---|
| लम्बाई | : | 50–65 से0मी0 (सिर से शरीर तक)<br>26–60 से0मी0 (पूँछ की) |
| बालों का रंग | : | लाल–भूरा धारीदार |
| वज़न | : | लगभग 05 कि.ग्रा. |
| आहार | : | शाकाहारी |
| आयु | : | 08 से 10 वर्ष |
| निवास स्थान | : | बाँस के जंगलों में। |

आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में संरक्षण की स्थिति : लुप्तप्राय (Endangered)
भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 की अनुसूचि–I द्वारा संरक्षित।

# चौसिंघा की सींग

वैज्ञानिक नाम : ***Tetracerons quadricornis***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : मैमेलिया*
*ऑर्डर : आर्टियोडैक्टाइला*
*फ़ैमिली : बोवाइडी*

**Conservation status**

Extinct — Threatened — Least Concern

EX EW CR EN **VU** NT LC
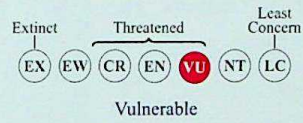
Vulnerable

चौसिंघा, हिरणों की एक छोटी प्रजाति है, जो भारत एवं नेपाल के खुले जंगल में निवास करती है। यह एक ऐसी प्रजाति है, जिसकी ऊंचाई 55–64 से0मी0 तक होती है। इस प्रकार यह एशिया में पायी जाने वाली हिरण की प्रजातियों में सबसे छोटी प्रजाति का हिरण है। नर के सर पर आजीवन चार सींग होती हैं। यह आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में असुरक्षित (Vulnerable) श्रेणी में आता है।

# ग्रेट/डस्की हार्न उल्लू

वैज्ञानिक नाम : ***Bubo virginianus***

***फ़ाइलम : कॉर्डेटा***
***क्लास : एव्ज़***
***ऑर्डर : स्ट्राइजीफॉर्मिस***
***फ़ैमिली : स्ट्राइजाइडी***

**Conservation status**

Extinct — EX

EW | Threatened: CR, EN, VU | NT

Least Concern — **LC**

Least Concern
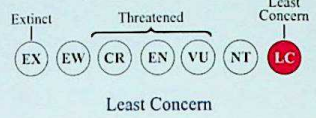
उल्लू एक ऐसा विचित्र निशाचर पक्षी है, जिसे दिन की अपेक्षा रात में अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह गहन अंधेरे में भी मनुष्य की आँखों के मुकाबले 100 गुना अधिक सहजता से देख सकता है। इसी कारणवश यह दिन में सोता है एवं रात में शिकार करता है। उल्लू से सम्बन्धित हमारे लोक जीवन में कई प्रकार की धारणाएँ, मान्यताएँ एवं अंधविश्वास प्रचलित हैं। कुछ लोग इसे शुभ मानते हैं, तो कुछ अशुभ मानते हैं। उल्लू की उपमा हमारे घरों में अक्सर मूर्ख लोगों को दी जाती है, लेकिन यूनानी कथाओं में इसे एक बुद्धिमान प्राणी बताया गया है तथा इसका

Least
Concern
LC

सम्बन्ध कला एवं कौशल की देवी ऐथेना से माना गया है। भारतीय परम्परा में विश्वास किया जाता है, कि उल्लू को किसी संकट का पूर्वानुमान हो जाता है। इसलिए इसे अपशकुन माना जाता है एवं तंत्र शास्त्र में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। दीपावली के समय पूजा सिद्ध करने के लिए तांत्रिक इसे 45 दिन पहले से मदिरा एवं मांस खिलाते हैं। धन की देवी लक्ष्मी का वाहन भी उल्लू होता है। प्राचीन काल में मौसम का हाल जानने के लिए उल्लुओं का उपयोग किया जाता था। जापान एवं अन्य देशों में इसके शरीर के विभिन्न अंगों से पारम्परिक औषधियाँ भी तैयार की जाती हैं।

उल्लू की प्रजातियाँ अपने सिर को 360 डिग्री तक घुमाने में सक्षम होती हैं। भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 की अनुसूची–I के अन्तर्गत उल्लू संरक्षित है। इसकी कुछ प्रजातियाँ गम्भीर रूप से लुप्तप्राय (Critically endangered) जीवों की श्रेणी में दर्ज है, इनके शिकार या तस्करी करने पर कम से कम 3 वर्ष या उससे अधिक दण्ड का प्राविधान है।

राक ऑऊल, ब्राउन फिश ऑऊल, थार्न ऑऊल, कोलार्ड स्कॉप्स ऑऊल, मॉटल्ड वुड ऑऊल, यूरेशियन ऑऊल आदि लुप्तप्राय प्रजाति की श्रेणी में चिन्हित हैं। ग्रेट/डस्की हार्न्ड आऊल कम चिंताजनक श्रेणी (Least Concern) का पक्षी है। इन्हें पालने एवं शिकार करने पर पूर्ण रूप से प्रतिबन्ध है। पूरे विश्व में ऐन्टार्क्टिका महाद्वीप को छोड़ कर उल्लू की लगभग 225 प्रजातियाँ पायी जाती हैं।

## महत्वपूर्ण तथ्य

| | | |
|---|---|---|
| पंखों की लम्बाई | : | 25 इंच |
| खुले हुए पंखों का विस्तार | : | 4.6 फिट |
| पंखों का रंग | : | गहरा भूरा एवं स्लेटी |
| वज़न | : | 500 ग्राम से 2.5 कि.ग्रा. |
| आयु | : | 5–10 वर्ष जंगल में |
| निवास स्थान | : | जंगल, रेगिस्तान, खुले मैदान, घनी बस्ती आदि। |
| आवाज़ | : | 'व्हू–व्हू–व्हू' |
| भोजन | : | चूहे, पक्षी एवं अन्य छोटे जानवर |

# हिमालयन काला भालू

वैज्ञानिक नाम : ***Melursus ursinus***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : मैमेलिया*
*ऑर्डर : कॉर्निवोरा*
*फ़ैमिली : अर्साइडी*

**Conservation status**

Extinct — Threatened — Least Concern

EX EW EN VU NT LC

Vulnerable
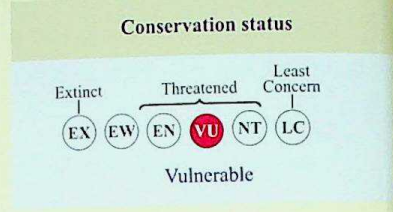
काले झबरीले बालों वाला यह प्राणी भारत, नेपाल एवं श्रीलंका के पहाड़ी जंगलों में निवास करता है। मुख्य रूप से दीमक एवं चींटियां इसका आहार हैं। अपने मुड़े हुए नुकीले पंजों से शिकार पकड़ते समय यह अपने दोनों नथुनों को पूरी तरह से बन्द कर लेता है, जिससे कि नथुनों के माध्यम से शरीर के अन्दर चींटी और दीमक प्रवेश न कर सके। भालू की प्रजातियों में केवल यह प्रजाति अपने बच्चों को पीठ पर लाद कर चलती है। इनके निवास स्थान के क्षरण तथा पारम्परिक औषधि के लिये बाल व नाखून हेतु शिकार के कारण इनकी जनसंख्या निरंतर कम हो रही है। अतः इन्हें आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में संरक्षण की दृष्टि से असुरक्षित (vulnerable) श्रेणी में रखा गया है। सीने पर सफ़ेद अथवा क्रीम "V" के आकार का चिन्ह होता है। इस प्रजाति

की पास की दृष्टि एवं सूंघने की क्षमता अत्यधिक तीव्र होती है साथ ही लम्बाई 5–6 फीट, ऊँचाई 2–3 फीट तथा वज़न 90 से 140 किलो ग्राम तक होता है।

यह बहुत ही व्यस्त रहते हैं तथा प्रातः एवं सांय काल में अपने शिकार की खोज में पैने पंजों की सहायता से दीमक के टीले एवं पेड़ों की जड़ों को खोद डालते हैं। चींटी एवं दीमक के अतिरिक्त ये फल–फूल एवं कीड़े–मकोड़े भी खाते हैं। भोजन की कमी होने पर मरे हुए जानवर तथा फसलों को भी अपना भोजन बना लेते हैं। सीतनिद्रा का समय जून से अगस्त के मध्य होता है। यह बहुत ही हिंसक प्रवृत्ति के जीव हैं एवं कभी–कभी बिना किसी कारणवश हमला कर देते हैं और खतरनाक आवाज़ निकालते हैं। सामान्यतः यह अपने पंजों से शिकार के सिर एवं चेहरे पर प्रहार करते हैं एवं कभी–कभी गिरे हुए शिकार पर दांतों से भी घाव करते हैं। मादा लगभग 5–7 माह के गर्भकाल के बाद दिसम्बर से जनवरी माह में शिशु को जन्म देती है, जो मादा के साथ 9–12 माह तक गुफ़ा के अन्दर ही रहते हैं। बच्चे माता के साथ 2–3 साल तक रहते हैं, इसके उपरान्त वह स्वतंत्र रूप से शिकार करते हैं। गर्भावस्था के दौरान मादा अत्यधिक उत्तेजित, आलसी, एकान्तप्रीय एवं भोजन में कोई विशेष रूचि नहीं रखने वाली हो जाती है। इसके इस व्यवहार को denning behaviour कहते हैं।

जंगलों में यह दिन में विचरण करते हैं, यद्यपि मानव बस्ती के समीप रहने पर यह रात्रि में विचरण करने वाले हो जाते हैं। काला भालू एक बहुत ही अच्छा पर्वतारोही है और यह पेड़ों पर भी बड़ी कुशलता से चढ़ता है। भालू भोजन, आराम, धूप, शत्रु से बचाव एवं सीतनिद्रा आदि हेतु पहाड़ों एवं पेड़ों पर चढते हैं। पेड़ों पर भोजन करते समय यह पेड़ की डाल एवं टहनियों को तोड़कर अपने नीचे रख लेते हैं। इस प्रकार यह अपने विचरण क्षेत्रों (Home Range) में कई पेड़ों पर इस प्रकार की संरचना बनाते हैं, जो कि एक घोंसले जैसा दिखता है।

### महत्वपूर्ण तथ्य

| | | |
|---|---|---|
| ऊंचाई | : | लगभग 6 फीट |
| लगभग | : | 5–6 फीट (शरीर), 2.5 से 4.5 इंच (पूँछ) |
| बालों का रंग | : | काला |
| वज़न | : | 54–140 किलो ग्राम |
| आयु | : | लगभग– 40 वर्ष |
| निवास स्थान | : | भारत, नेपाल, श्रीलंका |

आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट के अनुसार संरक्षण की स्थिति : असुरक्षित (vulnerable)
भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 की अनुसूची–I द्वारा संरक्षित।

# सोहन चिड़िया (गोण्डावन)

वैज्ञानिक नाम : ***Ardeotis nigriceps***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : एव्ज़*
*ऑर्डर : ओटिडीफॉर्मिस*
*फ़ैमिली : ओटाइडी*

**Conservation status**

Extinct — Threatened — Least Concern
EX EW **CR** EN VU NT LC
Critically Endangered
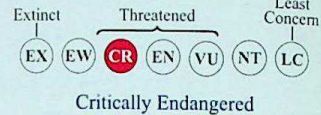
सफ़ेद एवं भूरे पंखों वाला, सर पर काला ताज एवं डैनों पर काले धब्बे सहित लगभग 90–122 से0मी0 ऊँचाई का यह पक्षी भारतीय उपमहाद्वीप का निवासी है। मादा ताज रहित एवं लगभग नर के बराबर होती है। यह मुख्यतः शुष्क एवं अर्द्धशुष्क घास के मैदानों में निवास करता है। प्रजनन के लिये यह मई से जुलाई के मध्य एक साथ झुण्ड में इकट्ठा होते हैं। इनका घोंसला खुले मैदान में घासों के मध्य होता है, जिसमें मादा एक बार में एक एवं अधिकतम दो अण्डे देती हैं। मार्च से सितम्बर के मध्य प्रजनन काल होता है और अण्डे को सेने का कार्य केवल मादा ही करती है। भिन्न–भिन्न कार्यकलापों के लिए यह अलग–अलग प्रकार के प्राकृतिक आवास को चयनित करते हैं जैसे कि घोंसला बनाने के लिए उँची–ऊँची घनी घासों से युक्त कीड़े–मकोड़ों की बहुतायत वाले स्थान जहाँ अन्य जानवरों का आवागमन कम हो, प्रेमालाप के प्रदर्शन हेतु

छोटी–छोटी घास वाली थोड़ी ऊँची टीलेनुमा जगह, बसेरा लेने के लिए कम वनस्पतियों वाली जगह एवं मध्यम ऊँचाई के पेड वाली जगह सोने आदि के लिए। सोहन चिड़िया (गोण्डावन) की जनसंख्या में निरन्तर गिरावट के कारण इसे आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में वर्ष 2011 से गम्भीर रूप से लुप्तप्राय (Critically Endangered) पक्षी की श्रेणी में रखा गया है। इसका मुख्य कारण इनके निवास स्थान का क्षरण एवं समाप्त होना, शिकार एवं इनकी दिनचर्या में स्थानीय लोगों द्वारा बाधा उत्पन्न करना आदि है। पूर्व में भारतीय उपमहाद्वीप में पायी जाने वाली यह प्रजाति वर्तमान में केवल राजस्थान के थारू मरुस्थल एवं कच्छ क्षेत्र में विद्यमान है। वर्ष 1971 से 2010 तक इस पक्षी की जनसंख्या में लगभग 82% की कमी आयी है एवं यह भी अनुमान है कि, यदि इसके संरक्षण के लिए सरकार द्वारा विशेष प्रयास नहीं किये गये तो अगले 50 वर्षों में यह प्रजाति लुप्त हो जायेगी। इस पक्षी के संरक्षण के लिये वर्ष 2015 में राजस्थान सरकार द्वारा लगभग 13 करोड़ लागत की संरक्षण परियोजना प्रारम्भ की गयी है। राजस्थान के डेज़र्ट प्राणी राष्ट्रीय उद्यान को सोहन चिड़िया (गोण्डावन) के संरक्षण हेतु बायोस्फ़ेयर रिज़र्व के रूप में घोषित किया गया है। WWF (World Wide Fund for Nature) की 2018 की रिपोर्ट के अनुसार लगभग 200 से भी कम पक्षी प्राकृतिक रूप में शेष हैं। यदि इन्हें संरक्षित नहीं किया गया तो भारतीय चीते की भांति यह प्रजाति भी निकट भविष्य में लुप्त हो जायेगी। इनके संरक्षण की दिशा में वर्ल्ड वाइड फण्ड द्वारा निरन्तर प्रयास किया जा रहा है।

झुण्ड में रहने वाले ये पक्षी विशेषकर सर्दियों में दर्जनों की संख्या में एक साथ देखे जा सकते हैं। प्रजनन काल के अतिरिक्त नर–मादा का समूह अलग–अलग रहता है। सामान्यतया यह धीरे–धीरे चलने वाला पक्षी है, परन्तु छेड़ने पर यह तेज़ रफ़्तार से दौड़ता है एवं कभी–कभी अचानक उड़ कर भी शत्रुओं से रक्षा करता है। इनके दौड़ने की गति कभी–कभी लोमड़ी से भी तेज़ होती है जो कि लगभग 48 किमी. प्रति घण्टा तक हो सकती है। दौड़ने के साथ–साथ यह उड़ने में भी निपुण होते हैं एवं आवश्यकता पड़ने पर लगभग 80 किमी. प्रति घण्टा की गति से उड़ते हैं। मूलरूप से यह शांत पक्षी है, परन्तु खतरे में एवं प्रजनन काल में यह एक विशेष प्रकार की ध्वनि निकालते हैं।

### महत्वपूर्ण तथ्य

| | |
|---|---|
| लम्बाई | : लगभग 1 मी. |
| ऊँचाई | : अधिकतम 4 फ़ीट |
| वज़न | : अधिकतम 15 कि.ग्रा. |
| देशान्तर गमन (Local migration) | : पूर्ण रूप से भ्रमणशील |
| आयु | : 12–15 वर्ष |
| निवास स्थान | : भारतीय उपमहाद्वीप के शुष्क एवं अर्द्धशुष्क घास के मैदान |
| खतरा | : स्थानीय लोगों द्वारा मांस एव अण्डे हेतु शिकार, निवास स्थान का क्षरण, खुले हुए बिजली के तार आदि। |
| भोजन | : कीड़े–मकोड़े आदि। |

आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में संरक्षण की स्थिति : गम्भीर रूप से लुप्तप्राय (Critically Endangered)

भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 की अनुसूची–I द्वारा संरक्षित।

# चरत

वैज्ञानिक नाम : ***Houbaropsis bengalensis***

*फ़ाइलम :* *कॉर्डेटा*
*क्लास :* *एव्ज़*
*ऑर्डर :* *ओटिडीफॉर्मिस*
*फ़ैमिली :* *ओटाइडी*

**Conservation status**

Extinct — Threatened — Least Concern

EX EW **CR** EN VU NT LC

Critically Endangered
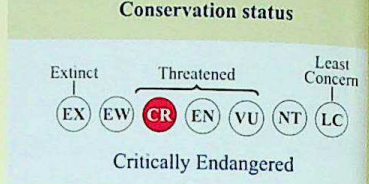
कम्बोडिया, भारत, नेपाल एवं वियतनाम के शुष्क एवं अर्द्धशुष्क घास के मैदानों में निव
करने वाला यह पक्षी संभवतः बांग्लादेश से लुप्त हो चुका है। नर काले पंख एवं सफ़ेद डैने
तथा मादा एवं अविकसित बच्चे भूरे अथवा बादामी रंग के होते हैं। पूर्ण वयस्क की लम्बाई 66-
से0मी0 एवं ऊँचाई लगभग 55 से0मी0 होती है। इस प्रजाति की दो पृथक जनसंख्या है,
भारतीय उपमहाद्वीप में एवं दूसरी दक्षिण पूर्व एशिया में निवास करती है। भारतीय उपमहाद्वीप
जनसंख्या भारत में उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र से होते हुए नेपाल, आसाम, अरूणांचल प्रदेश
लेकर पूर्व के निवास स्थान बंग्लादेश तक फैली हुई है। इनकी जनसंख्या पिछले कई वर्षों में
तीव्रता से कम हुई है, चिंता का विषय यह है कि, संरक्षित क्षेत्रों में भी जनसंख्या में कमी आयी

इस प्रजाति की पिछली तीन पीढ़ियों में सबसे तेज़ी से जनसंख्या में कमी आयी है। चरत तराई एवं मौसमी जलप्लावित, प्राकृतिक अथवा कृत्रिम घास के मैदानों एवं कभी–कभी झाड़ियों तथा जंगलों की छोटी पट्टियों में निवास करते हैं। इनके निवास स्थान घास के मैदानों का लगातार क्षरण, जल निकासी द्वारा रूपान्तरण, खेतों एवं बगीचों में परिवर्तन, अत्यधिक चराई, अनियन्त्रित कटाई, जलाई, जोताई, बांध के निर्माण, विदेशी प्रजातियों का इनके क्षेत्र में आगमन एवं मानव द्वारा अनुचित विकास इस प्रजाति के लिए मुख्य संकट है। चरत की औसत आयु लगभग 10 वर्ष होती है एवं यह पूर्णरूप से स्थानीय प्रवासी (Local migratory) पक्षी है। इस पक्षी का प्रजनन काल फरवरी से जुलाई तक होता है। प्रजनन काल में प्रत्येक वयस्क नर अपना अलग प्रजनन क्षेत्र (Breeding territory) स्थापित करता है, जबकि अवयस्क नर प्रजनन क्षेत्र के चारों ओर मण्डराते रहते हैं। संरक्षण की दृष्टि से इसे आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में वर्ष 2007 से गम्भीर रूप से संकटग्रस्त (Critically Endangered) की श्रेणी में रखा गया है, चरत की विश्वव्यापी जनसंख्या लगभग 250–999 है। जिसमें से लगभग 300 से 400 पक्षी भारत में निवास करते हैं। औसत रूप से यह लगभग 10 वर्ष तक जीवित रह सकते हैं। पूर्ण वयस्क पक्षी की लम्बाई लगभग 66–68 से0मी0 एवं मादा का वज़न 1.7 से 1.9 कि.ग्रा. तथा नर का वज़न 1.2 से 1.5 कि.ग्रा. होता है।

## महत्वपूर्ण तथ्य

| | | |
|---|---|---|
| आयु | : | 10 वर्ष लगभग |
| ऊँचाई | : | लगभग 55 से0मी0 |
| लम्बाई | : | 66–68 से0मी0 |
| वज़न | : | मादा– 1.7–1.9 कि.ग्रा. |
| नर | : | 1.2–1.5 कि.ग्रा. |
| देशान्तर गमन (Local migration) | : | पूर्ण रूप से भ्रमणशील |
| निवास स्थान | : | शुष्क एवं अर्द्धशुष्क घास के मैदान। |

आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में संरक्षण की स्थिति : गम्भीर खतरे में (Critically Endangered) भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 की अनुसूची–I द्वारा संरक्षित

# मगरमच्छ

वैज्ञानिक नाम : ***Crocodylus palustris***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : रेप्टीलिया*
*ऑर्डर : क्रोकोडीलिया*
*फ़ैमिली : क्रोकोडिलाइडी*

**Conservation status**

Extinct — Threatened — Least Concern

EX EW EN **VU** NT LC

Vulnerable
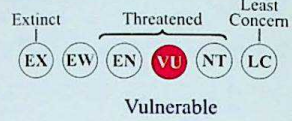
मगरमच्छ भारतीय उपमहाद्वीप एवं ईरान से लेकर दक्षिण पूर्व एशिया के पश्चिमी क्षेत्र ताज़े पानी की झीलों, पोखरों, दलदली क्षेत्रों जिनकी गहराई अधिकतम 5 फीट हो आदि में निवा करता है, परन्तु तेज़ पानी के बहाव वाली नदियों से दूर रहता है। भीषण गर्मी से बचने के लि यह मिट्टी खोद कर उसके अन्दर छिप जाता है। सम्पूर्ण विश्व में मगरमच्छ की कुल प्रजातियां विद्यमान हैं। वयस्क मगरमच्छ 13–16.5 फीट तक लम्बे होते हैं एवं नर, मादा की तुल में बड़ा होता है। मगरमच्छ का मुँह घड़ियाल की अपेक्षा चौड़ा होता है, यह ज़मीन पर चलने अधिक सक्षम है तथा जमीन पर कई कि.मी. तक चल सकता है। मगरमच्छ अपने शिकार पर घा लगाकर हमला करते हैं। जल अथवा धरती पर यह बड़ी ही शांति से बैठकर अपने शिकार करीब आने की प्रतीक्षा करता है एवं उसके पास आते ही अचानक उस पर हमला कर देता है ऊदबिलाव, मछलियां, पक्षी, मेंढक, बंदर एवं कभी–कभी हिरण भी इनका शिकार बन जाते है
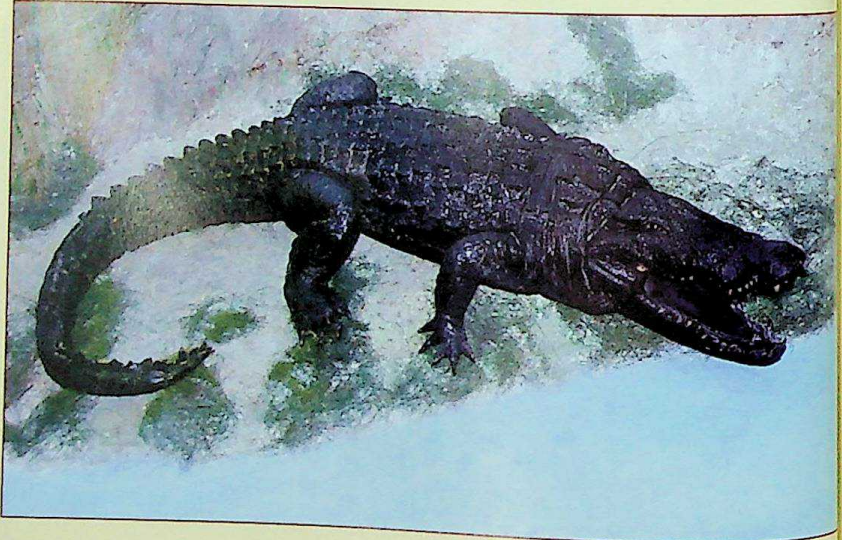
प्रायः यह इन्सानों पर भी हमला कर देते हैं, इसका मुख्य कारण इन्सानों का उनके प्रजनन क्षेत्र में प्रवेश, अन्य जानवरों से भ्रम एवं स्वयं के बचाव आदि है। अधिकांश घटनाओं में शिकार जान बचाने में असफल रहता है। वयस्क मादा किसी सुरक्षित स्थान को खोजकर गड्ढा खोद कर अपना घोंसला बनाती है एवं प्रत्येक वर्ष उसी स्थान पर अण्डे देती है। इसके बाद गड्ढे को 30 से 40 से0मी0 तक मिट्टी से ढ़क देती है। फरवरी से अप्रैल के मध्य मादा 20 से 100 अण्डे एक बार में देती है एवं इसे 55–75 दिनों तक सेने के बाद बच्चे निकलने के समय मादा एवं कभी–कभी नर द्वारा पास के जलाशय में ले जाया जाता है। भारत के 15 राज्यों में लगभग 3,021 से 4,287 मगरमच्छ वर्तमान में मौजूद हैं। विगत 70–80 वर्षों में इनकी जनसंख्या में लगभग 30 प्रतिशत की कमी आयी है। आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट के अनुसार इन्हें असुरक्षित (Vulnerable) श्रेणी में रखा गया है। इसका मुख्य कारण इनके निवास स्थान का प्रदूषण द्वारा क्षरण होना, स्थानीय निवासियों द्वारा अण्डों का सेवन, मांस एवं चमड़े तथा विभिन्न प्रकार की औषधियों हेतु शरीर के विभिन्न भागों के प्रयोग हेतु इनका शिकार आदि है। अक्सर मछुआरों द्वारा भी इनका शिकार किया जाता है, क्योंकि यह जलाशय की मछलियों को अपना भोजन बना लेता है। कभी–कभी संरक्षित क्षेत्रों में चलने वाले वाहनों की तेज गति से दुर्घटना में मृत्यु के कारण भी इनकी जनसंख्या पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

प्रायः देखा जाता है, कि भोजन करते समय मगरमच्छ रोते हैं, इसके विषय में कुछ लोगों का मानना है कि, मगरमच्छ जब अपने शिकार को खाता है, तो उसे दुःख होता है। वैज्ञानिक रूप से यह गलत साबित हुआ है, क्योंकि खाते समय मगरमच्छ शिकार के मरने के कारण रोता नहीं है, बल्कि भोजन करते समय क्रोध करता है एवं फुफकारता है। जिसके कारण इसकी नाक की नली से होकर हवा के बुलबुले आंख तक पहुंचते हैं। इन बुलबुलों के दबाव से आंख की अश्रु ग्रन्थि (Lacrymal gland) से आँसू निकलता है, क्योंकि इनके आँसू रोने के स्थान पर दूसरे कारण से निकलते हैं, इसी लिये 'घड़ियाली आँसू' की कहावत प्रसिद्ध है।

### महत्वपूर्ण तथ्य

| | | |
|---|---|---|
| लम्बाई | : | 13–16.5 फीट |
| रंग | : | स्लेटी |
| वज़न | : | नर – 70–100 कि.ग्रा.<br>मादा – लगभग 40 कि.ग्रा. |
| निवास स्थान | : | भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, ईरान, बंग्लादेश एवं नेपाल के ताज़े / स्वच्छ पानी के जलाशय, छोटी नदियाँ एवं दलदली क्षेत्र। |
| प्रजनन काल | : | शीतकाल में फरवरी से अप्रैल के मध्य में मादा 20–100 अण्डे देती है। |
| आयु | : | लगभग 50 वर्ष |

आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में संरक्षण की स्थिति : असुरक्षित (Vulnerable)
भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 की अनुसूची–I द्वारा संरक्षित।

# एशियाई बब्बर शेर

वैज्ञानिक नाम : ***Panthera leo***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : मैमेलिया*
*ऑर्डर : कॉर्निवोरा*
*फ़ैमिली : फ़ेलाइडी*
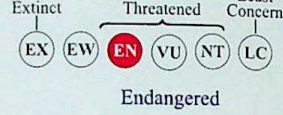
एशियाई बब्बर शेर अपनी अफ़्रीका की प्रजाति से थोड़ा छोटा होता है। नर का वज़न लगभग 160 से 190 कि.ग्रा. एवं मादा का वज़न लगभग 110 से 120 कि.ग्रा. तक होता है। पूर्ण वयस्क की ऊँचाई एवं लम्बाई क्रमशः लगभग 3.5 फीट एवं 9.5 फीट होती है। नर के चेहरे एवं गर्दन पर आगे की ओर लटकते हुए गहरे भूरे रंग के घने बाल होते हैं, जिसे अयाल कहते है इसे अत्यधिक आकर्षक बनाते हैं।
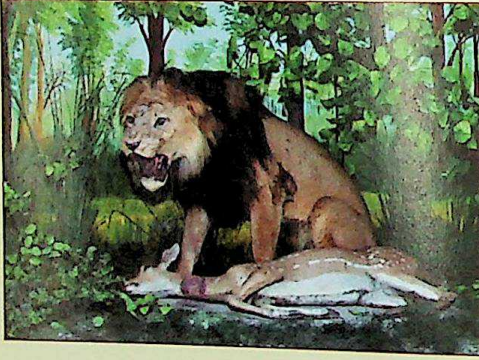
एक समय में यह प्रजाति पूर्व में बंगाल से लेकर मध्य प्रदेश के रीवा तक पायी जाती थी, परन्तु विभिन्न कारणवश इनके शिकार एवं निवास स्थान के नष्ट होने से इनकी जनसंख्या में तीव्रता से कमी आयी। भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 के लागू होने के उपरान्त शेरों के संरक्षण पर सरकार द्वारा विशेष ध्यान दिया गया एवं विभिन्न संरक्षण परियोजनाएं लागू की गईं, जिससे इनकी जनसंख्या में वृद्धि हुई है। वर्तमान में भारत में बब्बर शेर गुजरात के गिर राष्ट्रीय उद्यान में निवास करते हैं। केवल एक ही निवास स्थान तक सीमित रहने के कारण इनमें अनुवांशिक आन्तरिक प्रजनन (Genetic Inbreeding) की समस्या उत्पन्न हुई है, जिसके निवारण हेतु शेरों को अन्य स्थानों पर स्थानान्तरित किया जा रहा है, जिसमें उ.प्र. का इटावा लायन सफारी एक है। गिर राष्ट्रीय प्राणि उद्यान में खुले कुओं में गिरने के कारण भी अक्सर शेरों की मृत्यु हो जाती है। जिसके निवारण हेतु WWF (World Wide Fund for Nature, India) द्वारा अधिकतर खुले कूओं की चारदीवारी कर दी गई है एवं इसके परिणाम अच्छे आये हैं। इनकी छोटी जनसंख्या एवं प्राकृतिक रूप में एक ही स्थान पर सीमित रहने के कारण यह आन्तरिक प्रजनन अवसाद (Inbereeding depression) का शिकार हो रहे हैं। वर्ष 2018 में गिर राष्ट्रीय उद्यान में शेरों की अचानक भारी संख्या में मृत्यु के कारण सरकार द्वारा इसे मध्य प्रदेश के भी जंगलों में स्थानान्तरित करने पर विचार किया जा रहा है। संरक्षण की दृष्टि से आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में बब्बर शेर को लुप्तप्राय (Endangered) श्रेणी में रखा गया है।

### महत्वपूर्ण तथ्य

| | | |
|---|---|---|
| ऊँचाई | : | लगभग 3.5 फीट |
| लम्बाई | : | लगभग 9.5 फीट |
| भार / वज़न | : | नर–160–190 कि.ग्रा.<br>मादा–110–120 कि.ग्रा. |
| रंग | : | हल्का भूरा |
| आयु | : | 10–14 वर्ष जंगलों में<br>15–20 वर्ष चिड़ियाघर आदि में |
| निवास स्थान | : | गिर राष्ट्रीय उद्यान, गुजरात। |
| प्रजनन काल | : | जनवरी से फरवरी, एक बार में 2–3 शावक |
| गर्भकाल | : | लगभग 116 दिन |
| आहार | : | मांसाहारी |

आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट के अनुसार संरक्षण की स्थिति : लुप्तप्राय (Endangered)
भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 की अनुसूची–I द्वारा संरक्षित।

# पहाड़ी बकरी 'सीरो' की सींग

वैज्ञानिक नाम : ***Capricornis tahr***

***फ़ाइलम : कॉर्डेटा***
***क्लास : मैमेलिया***
***ऑर्डर : आर्टियोडैक्टाइला***
***फ़ैमिली : बोवाइडी***

**Conservation status**

Extinct — Threatened — Least Concern
EX EW CR EN VU NT LC
Near Threatened
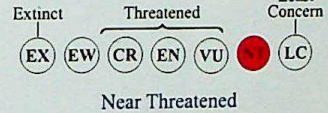
यह भारत, चीन, भूटान एवं बांग्लादेश के घने पहाड़ी जंगलों में निवास करने वाली बकरी की एक प्रजाति है, जिसकी ऊँचाई लगभग 1.0 मी. होती है। वैज्ञानिकों द्वारा इस प्रजाति का विस्तृत अध्ययन अभी तक नहीं किया गया है। मूलरूप में यह अकेले रहना पसंद करती है एवं पहाड़ों के नमी वाले दर्रों में जहाँ घनी वनस्पति होती है, इसका निवास स्थान है। यह प्राणी बहुत ही तेज़ रफ्तार से दौड़ने में सक्षम है। स्थानीय निवासियों द्वारा फ़र (बाल) एवं मांस हेतु शिकार करने के कारण इनकी जनसंख्या निरंतर कम हो रही है। भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम–1972 के अनुसार यह संरक्षित श्रेणी में है एवं इसके शिकार पर प्रतिबन्ध है। आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में इसे खतरे के करीब (Near Threatened) श्रेणी में रखा गया है।

# स्पॉंज

वैज्ञानिक नाम : ***Sponge***

*किंगडम :* *एनिमेलिया*
*फ़ाइलम :* *पोरीफेरा*

स्पॉंज Phyllum Porifera के बहुकोशिकीय जलीय जीव हैं, जो समुद्रों/नदियों की गहराइयों से लेकर उपस्थलीय (subterrestrial) सतह तक पाये जाते हैं तथा 0.5 इंच से लेकर 6.6 फीट तक की ऊंचाई के होते हैं। इनका शरीर विभिन्न प्रकार की कोशिकाओं से बना होता है, जो तांत्रिका–तंत्र, मांसपेशियां, पाचन तन्त्र, आदि के रूप में कार्य करती हैं। अन्य जीवों की भांति ये चलते नहीं हैं तथापि एक ही स्थान पर स्थूल खड़े रहते हैं अथवा बहुत धीमी गति से चलते हैं। इसी कारणवश कभी–कभी इन्हें वनस्पति भी समझ लिया जाता है। इनकी मुख्य विशेषता Water Canal System है, जिसकी संरचना के आधार पर स्पॉंज को साधारण एवं जटिल की श्रेणी में विभाजित किया गया है। सभी स्पॉंजों का शरीर बेलनाकार होता है, जिसमें पानी अन्दर आने के असंख्य छिद्र (osculum) होते हैं, परन्तु बाहर निकलने का केवल एक छिद्र (Ostium) होता है। शरीर में choanocytes एक विशेष प्रकार की collar cells होती हैं, जो pumping station की भांति कार्य कर किसी भी स्पॉंज के जीवन के लिये उत्तरदायी होती हैं। Flagellum (बाल के आकार का) युक्त choanocytes शरीर की बाहरी सतह पर स्थित होती हैं एवं पानी की लहरों से भोजन के तत्वों को लेकर शरीर में भेजती हैं, जहाँ amoeboid cell द्वारा इनका पाचन होता है। एक दूसरी कोशिका archaeocytes के माध्यम से भोजन के तत्वों को शरीर में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जाता है। स्पॉंज अपने शरीर के घनत्व का 10 गुना पानी एक बार में पम्प करने की क्षमता रखते हैं। यह जलीय पारिस्थितिकी तन्त्र में पुनर्चक्रण (recycling) की प्रक्रिया में एक अहम भूमिका निभाते हैं।

गहरे पानी में निवास करने वाले स्पॉजं काले व भूरे होते हैं एवं छिछले पानी के स्पॉजं लाल, पीले, हरे अथवा नीले रंग के होते हैं। स्पॉजं की लगभग 8,500 प्रजातियां विश्व व्याप्त हैं, जिसमें से लगभग 600 प्रजातियां भारत में पायी जाती हैं। ये विभिन्न रंगों एवं आकार तथा माप के होते हैं। कभी–कभी तो इतने बड़े होते हैं कि एक वयस्क मानव पूर्णरूप से इसके अन्दर समाहित हो सकता है। प्रसाधन सामग्री एवं पाकशाला में सूखे हुए स्पॉजं का प्रयोग बहुतायत में होता है। स्पॉजों में पुनर्जनन (Rebirth) की अद्भुत क्षमता होती है। इनके शरीर के एक छोटे से भाग से भी एक नया जीव तैयार हो जाता है। इस प्रजाति की आयु बहुत लम्बी होती है, कभी–कभी यह 200 वर्ष तक जीवित रहते हैं।

जलीय पारिस्थितिकी तन्त्र में स्पॉजं प्रथम उत्पादक के रूप में मुख्य भूमिका एवं मूँगा प्रणाली (coral reef system) में पोषक तत्वों के चक्र (cycle) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यह जल में मौजूद विषैली अमोनिया को नाइट्रेट में परिवर्तित कर जल को विषैला होने से बचाते हैं। अन्य जीवों, पौधों, काई (aglae) आदि के साथ पारस्परिक सहजीवन (mutual symbiosis) को बढ़ावा देकर समुद्री जीवन की जैव विविधता की वृद्धि में अपना योगदान देते हैं।

# हिमालयन ताह्र की सींग

वैज्ञानिक नाम : ***Hermitragus jemlehicus***

*फाइलम* : *कॉर्डेटा*
*क्लास* : *मैमेलिया*
*ऑर्डर* : *आर्टियोडैक्टाइला*
*फैमिली* : *बोवाइडी*
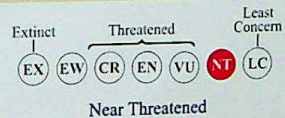
जंगली बकरी की तुलना में यह बड़ा चौपाया है जो दक्षिण तिब्बत, उत्तर भारत एवं नेपाल में हिमालय पर्वत पर पाया जाता है। इसका सिर छोटा, कान नुकीले, आंखे बड़ी एवं सींग पैनी होती हैं। इनकी सींग की लम्बाई अधिकतम 46 से0मी0 तक होती है तथा यह पीछे की ओर मुड़ी हुई होती है। मादा वजन एवं लम्बाई में कम होती है तथा इसकी सींग भी छोटी होती है। स्थानीय लोगों द्वारा गर्म फ़र एवं मांस हेतु इसका शिकार किया जाता है। इनकी जनसंख्या में निरन्तर कमी के कारण इसे आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में खतरे के करीब (Near Threatened) की श्रेणी में रखा गया है।

# ओरिबी की सींग

वैज्ञानिक नाम : ***Ourebia ourebi***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : मैमेलिया*
*ऑर्डर : आर्टियोडैक्टाइला*
*फ़ैमिली : बोवाइडी*

**Conservation status**

Extinct — Threatened — Least Concern

EX EW CR EN VU NT LC

Critically Endangered
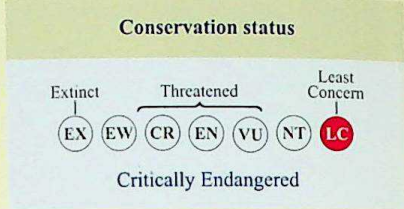
ओरिबी को अफ़्रीका की भाषा में ऊरबीटजी कहते हैं। यह अत्यन्त ही सुन्दर छरहरे पैरों वाला लम्बी गर्दन युक्त चौपाया है, जिसका निवास स्थान दक्षिण अफ़्रीका के सहारा रेगिस्तान के किनारे पर स्थित घने घास के मैदान है। इनकी कमर एवं सीने का ऊपरी भाग लाल या भूरा, ठुड्डी, गला, सीना, पेट एवं पुटठा सफ़ेद, पूँछ छोटी झबरीली बालों वाली, ऊपर से काली अथवा भूरी एवं अंदर से सफ़ेद होती है तथा कान के नीचे काले रंग का एक धब्बा होता है। ओरिबी का नथुना लाल रंग का तथा जबड़े के दोनों ओर एक Preorbital gland (ग्रन्थि) स्थित होती है। इससे एक विशेष प्रकार की सुगंध निकलती है, जिसे यह अपने अधिकार क्षेत्र (Home range) को दर्शाने में प्रयोग करता है। नर के सर पर संकरी, सीधी, आधी रिंगदार, सिरे पर सीधी एवं नुकीली सींग होती है, जिसकी लम्बाई लगभग 19 से0मी0 होती है। यह तेज़ रफ़्तार से दौड़ने में सक्षम है। स्थानीय लोगों द्वारा मांस एवं चमड़े हेतु इनके शिकार के कारण इनकी जनसंख्या में निरंतर कमी आ रही है।
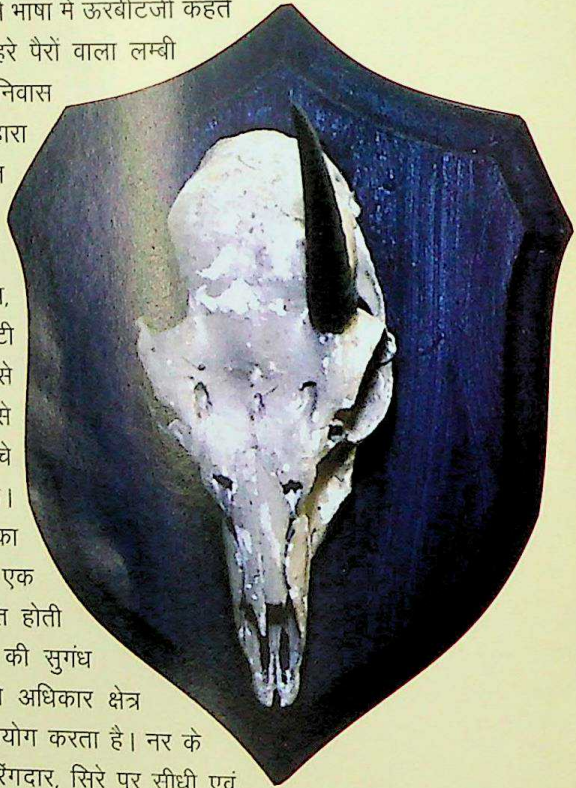
# भौंकने वाला हिरण/काकड़ की सींग

वैज्ञानिक नाम : ***Cervus muntjak***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : मैमेलिया*
*ऑर्डर : आर्टियोडैक्टाइला*
*फ़ैमिली : सर्वाइडी*

**Conservation status**

Extinct — Threatened — Least Concern

EX EW EN VU NT **LC**

Least Concern
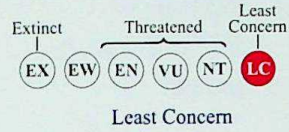
भारतीय मुन्टजैक जिसे लाल मुन्टजैक या भौंकने वाला हिरण भी कहते हैं, के मुलायम, भूरे, सुरमई रंग के छोटे–छोटे बाल होते हैं, जिस पर कभी–कभी क्रीम रंग की धारियां भी होती हैं। यह प्रजाति सर्वाहारी है, जो कि, घास–फूस, फल, पेड़ों की जड़, चिड़ियों के अण्डे एवं छोटे जानवरों को भी अपना भोजन बना लेता है। यह कभी–कभी मरे हुए जानवरों को भी खा लेता है। वर्तमान में यह भारत, श्रीलंका, म्यांमार, इण्डोनेशिया, ताइवान एवं चीन के जंगलों में पाया जाता है। यह प्रजाति क्रमागत उन्नति (evolution) के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। स्तनधारियों में सबसे कम Chromosome इसमें पाये जाते हैं। नर मुन्टजैक में कुल 7 द्विगुणित (diploid) क्रोमोसोम एवं मादा में कुल 6 द्विगुणित (diploid) क्रोमोसोम होते हैं, जो कि स्तनधारियों में सबसे कम है। आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट के अनुसार इसे कम चिंताजनक (Least Concern) श्रेणी में रखा गया है।
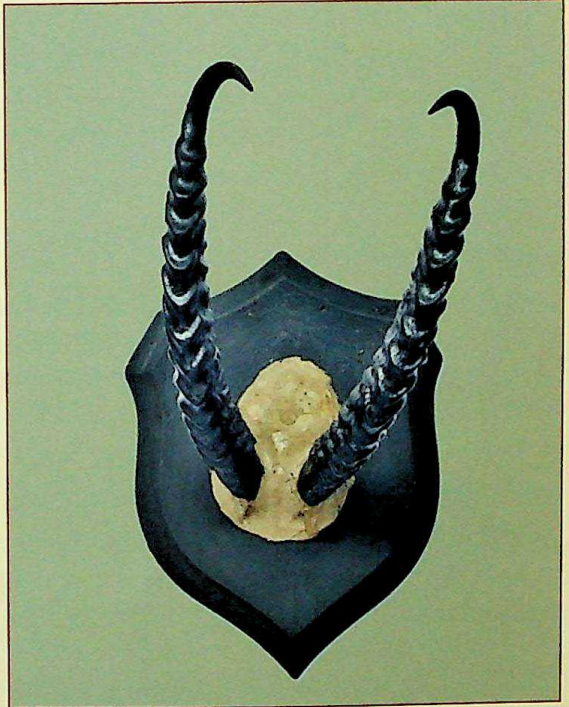
# पाढ़ा की सींग

वैज्ञानिक नाम : ***Hyelaphusn porcinus***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : मैमेलिया*
*ऑर्डर : आर्टियोडैक्टाइला*
*फ़ैमिली : सर्वाइडी*

| Conservation status |
| --- |
| Extinct — Threatened — Least Concern |
| EX EW CR **EN** VU NT LC |
| Endangered |
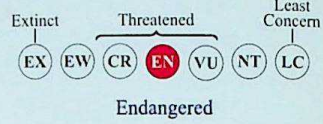
भारतीय पाढा एक छोटी प्रजाति का हिरण है जो पाकिस्तान के मैदानी भाग से लेकर उत्तरी भारत तथा दक्षिण–पूर्व एशिया, उत्तरी नेपाल, बांग्लादेश तथा चीन के युन्नान प्रान्त से लेकर थाइलैण्ड तक पाया जाता है। यह जंगलों में दौड़ते समय अपना सिर नीचे की ओर कर लेता है, जिससे कि इसकी सींग वनस्पति में फंसती नहीं है एवं यह तेज़ रफ़्तार से दौड़ सकता है। जब यह दौड़ रहा होता है, उस समय इसकी पूँछ खड़ी रहती है और उसके नीचे का सफ़ेद भाग दिखाई देता है। इसकी ऊंचाई लगभग 70 से0मी0 एवं वज़न लगभग 50 कि.ग्रा. होता है। कान गोल होते हैं तथा जैसे–जैसे इनकी आयु बढ़ती है, इनके बालों का रंग गर्दन एवं चेहरे पर हल्का होता जाता है। निरन्तर शिकार, निवास स्थान के ह्रास एवं क्षरण के कारण इनकी जनसंख्या में तेजी से गिरावट आ रही है। आई.यू.सी.एन. की रेड लिस्ट में इसे लुप्तप्राय (Endangered) श्रेणी में रखा गया है।

### महत्वपूर्ण तथ्य

| | | |
| --- | --- | --- |
| ऊँचाई | : | लगभग 70 से0मी0 |
| वज़न | : | लगभग 50 कि.ग्रा. (नर) |
| | : | लगभग 35 कि.ग्रा. (मादा) |
| गर्भकाल | : | 220–230 दिन |
| यौन परिपक्वता | : | 6 माह |
| आयु | : | लगभग 20 वर्ष |

# ऑक्टोपस

वैज्ञानिक नाम : ***Octopus vulgaris***

*फ़ाइलम : मोलस्का*
*क्लास : सिफैलोपोडा*

ऑक्टोपस समुद्र के अत्यन्त ही दिलचस्प जीव होते हैं। इस आठ भुजा वाले कोमल शरीर युक्त प्राणी की कुल 300 प्रजातियां विद्यमान हैं, जिनमें से कुछ प्रकाश उत्पन्न करने एवं अन्य जानवरों का रूप धारण करने की अद्‌भुत क्षमता रखते हैं। पूर्ण रूप से हडिड्यों के अभाव में इनका शरीर बहुत ही लचीला होता है, जिसके कारण यह बहुत छोटे छिद्र में प्रवेश कर बड़ी ही चालाकी से छिप जाते हैं।

ऑक्टोपस 2 इंच से लेकर 30 फीट लम्बाई तक के होते हैं। आँखों की सहायता से यह अच्छी तरह से देख सकते हैं। सबसे विशिष्ट गुण इनकी आठ भुजाएं एवं उसमें स्थित सक्शन कप होता है, जिसकी सहायता से यह सतह पर मजबूत पकड़ बनाते हैं। ऑक्टोपस के मुंह में दो चोंच, तीन हृदय एवं शरीर में लाल के स्थान पर नीले रक्त का प्रवाह होता है।

ऑक्टोपस समुद्री अकशेरूकी जीवों में सबसे बुद्धिमान प्राणी माना जाता है। जब कभी इसकी कोई भुजा किसी कारणवश नष्ट हो जाती है, तो दूसरी नयी भुजा निकल आती है। यह आत्मरक्षा एवं प्रहार हेतु छलावरण, प्रकाश उत्पन्न करना, स्याही फैलाना, जेट प्रोपल्ज़न, विष निकालना, भुजाओं एवं चोंच द्वारा प्रहार करने आदि से कदापि नहीं चूकता है।

आमतौर पर यह पर्वतों की दरार, छोटे छिद्रों आदि में छिपकर रहते हैं। वयस्क ऑक्टोपस अकेले ही शिकार करता है, परन्तु बच्चे माता–पिता के साथ कुछ दिनों तक शिकार करना सीखते हैं। इनकी आयु 3–5 वर्ष तक होती है तथा यह मांसाहारी होते हैं एवं कभी–कभी एक–दूसरे को भी खा जाते हैं।

## महत्वपूर्ण तथ्य

| | | |
|---|---|---|
| लम्बाई | : | 02 इंच से 30 फीट तक |
| वज़न | : | 50 ग्रा. से 270 कि.ग्रा. |
| आयु | : | लगभग 3–5 वर्ष |
| निवास स्थान | : | ताज़े एवं खारे पानी के जलाशय तथा समुद्र। |

# शुतुरमुर्ग का अण्डा

वैज्ञानिक नाम : ***Struthio camelus***

*फ़ाइलम : कॉर्डेटा*
*क्लास : एव्ज़*
*ऑर्डर : स्ट्रूथियोनिफॉर्मिस*
*फ़ैमिली : स्ट्रूथियोनाइडी*
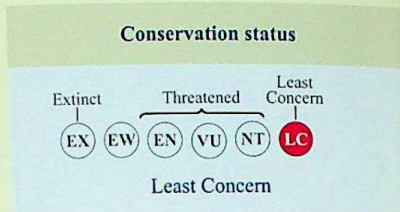
शुतुरमुर्ग का अण्डा औसत रूप से 15.5 से0मी0 लम्बा, 12.5 से0मी0 मोटा (परिधि) का होता है। अण्डे का कवच बहुत मजबूत होता है एवं माप के अनुसार यह 0.25–40 मिमी. तक होता है। समस्त पक्षियों के अण्डे में सबसे बड़े इस अण्डों का वज़न लगभग 1.5 कि.ग्रा. तक होता है, जो कि मुर्गी के अण्डे से 20 गुना बड़ा है। विजेता नर द्वारा बनाये गये कई घोंसले में मध्य के घोसले में मुख्य मादा 7 से 10 अण्डे देती है और अन्य मादाएं घोंसले के किनारे पर अण्डे देती हैं। कई घोंसले के एक समूह में लगभग 60 अण्डे एक साथ देखे जा सकते हैं।

शुतुरमुर्ग समस्त पक्षियों में सबसे बड़ा एवं अत्यन्त ही सुन्दर तथा अद्भुत पक्षी है। इसकी लम्बी पंख रहित गर्दन, छोटा सिर, स्थूल शरीर एवं लम्बा मांसल पैर बड़ा ही आकर्षक होता है।

इसके डैने छोटे होते हैं तथा खखरे/हलके पखों से ढके रहते हैं। पैरों के पंजे केवल दो ऊंगलियों से युक्त होने के कारण यह एक अद्वितीय पक्षी है। यद्यपि उड़ने के दृष्टिकोण से यह बहुत ही भारी होता है परन्तु इसकी दौड़ने की गति एवं क्षमता असाधारण होती है। शुतुरमुर्ग 70 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से लगातार 30 मिनट तक दौड़ सकता है। इस प्रजाति को अन्य पक्षियों से पृथक कर पक्षियों के एक अलग Order Struthioniformis में रखा गया है।

नर शुतुरमुर्ग अपने क्षेत्र एवं सामाजिक स्थिति को प्राप्त करने के लिए आक्रामक प्रदर्शन एवं कभी–कभी युद्ध भी करते हैं। इस संघर्ष का जो विजेता होता है, उसे सम्पूर्ण क्षेत्र (territory) एवं विभिन्न मादाओं पर अधिकार प्राप्त होता है। यद्यपि प्रजनन के समय केवल एक ही मादा शुतुरमुर्ग (मुख्य मादा) विजेता नर के साथ रहती है एवं अण्डों को सेने का कार्य करती है।

किसी समय में सम्पूर्ण अफ्रीका एवं पश्चिम एशिया शुतुरमुर्ग का निवास स्थान था, परन्तु वर्तमान में मूलरूप से यह केवल पूर्वी एवं दक्षिणी अफ्रीका में ही पाया जाता है। यद्यपि यह विश्व के अन्य भागों में फ़ार्मों में पाला जाता है। जंगलों में यह लगभग 50 के झुण्ड में रहता है तथा भोजन की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है। इनका झुण्ड विशेष प्रकार से गठित होता है, जिसमें नर एवं मादा दोनों ही होते हैं। प्रजनन के मौसम में मादा को आकर्षित करने के लिए नर एक विशेष प्रकार की बहुत ही तेज़ धूम मचाने वाली ध्वनि निकालता है एवं भव्य नृत्य करता है। विभिन्न मादाएं एक ही घोंसले में अण्डे देती हैं, जिसके फलस्वरूप लगभग 30 अण्डों का एक संयुक्त क्लच बनता है। नर अण्डों को सेने में मादा की सहायता करता है एवं अण्डों से बच्चे बाहर निकलने के बाद लगभग 40 दिनों तक केवल नर ही मूलरूप से बच्चों की सेवा करता है।

### महत्वपूर्ण तथ्य

| | |
|---|---|
| ऊँचाई | : 2.1–2.8 मी० |
| वज़न | : 100–160 कि.ग्रा. |
| पक्षति (Plumage) | : लिंग भेद |
| प्रवसन (Migration) | : अनुपस्थित |
| स्थिति | : स्थानीय सामान्य |
| आयु | : 40–45 वर्ष |
| निवास स्थान | : मरूस्थल एवं अर्द्धशुष्क घास के मैदान, खुले निवास स्थान, विभिन्न प्रकार के घास के मैदान–मूर, हीत्थ, सवान्ना एवं झाड़ियां इत्यादि। |

# मिस्र की ममी

मिस्र की सभ्यता पिरामिड, गुफाओं एवं उनमें संरक्षित ममी के लिये विश्व प्रसिद्ध है। भारत में कुल छः संग्रहालयों में मिस्र की ममी संग्रहीत है, जिसमें राज्य संग्रहालय लखनऊ एक है। संग्रहालय भ्रमण पर आने वाले दर्शकों के कौतूहल का विषय, यह ममी उत्तर प्रदेश में केवल राज्य संग्रहालय लखनऊ में संग्रहीत है। जे0 एच0 पॉटर नामक व्यक्ति जो कि मिडिलसेक्स, यू0 के0 के रहने वाले थे, उनसे यह ममी सन् 1952 में क्रय की गयी थी। ममी के लकड़ी के ताबूत पर प्लास्टर की एक पतली परत लगाकर उस पर सुन्दर कलाकृतियां बनायी गई हैं।

**काल** : 22–25वां वंश, ताबूत की लम्बाई 1.87 मीटर तथा ममी की लम्बाई 1.60 मी0 है।

**ताबूत** : ताबूत के ऊपर के ढक्कन पर अन्दर रखी हुई ममी की प्रतिकीर्ति चित्रित है, जिसमें शव को एक हरे रंग का विग (नकली बाल) लगाये हुए तथा लटाओं की छोर पर पीले एवं लाल रंग की पट्टी के साथ, माथे पर सूर्य देवता की प्रतिकीर्ति बनाये हुए दिखाया गया है। सर के ऊपरी हिस्से पर पंखों वाले स्कैरब बीटल (एक प्रकार का कीड़ा) को दिखाया गया है। आगे लटकते हुए बालों की दोनों लटाओं के बीच में गर्दन से लेकर कमर तक मोतियों से बनी एक चौड़ी पट्टी को 'वेसेक्टा' के रूप में दर्शाया गया है। जिसमें दस लड़ियां है तथा प्रत्येक लड़ी में फूल–पत्ती, फूलों के गुच्छे हैं, जो आगे के पूरे भाग को ढके हुए हैं। दोनों कंधों पर एक–एक बाज़, जिनके सिर पर सूर्य की प्रतिकीर्ति है चित्रित हैं।

इसके ठीक नीचे के भाग में आत्मरक्षा की स्थिति में आकाश की देवी 'नट' को अपने पंखों को फैलाए हुए दर्शाया गया है तथा ताबूत के नीचे के भाग को तीन बराबर भागों में बांटा गया है। इसके बीच के भाग में पीले रंग तथा ऊपर काले रंग से कुछ लिखा हुआ है। किनारे के दोनों भागों में प्रकाश के देवता होरस के दो पुत्रों को एक दूसरे के ऊपर चित्रित किया गया है। साथ ही दुःख तथा निराशा की मुद्रा में एक देवी को भी दर्शाया गया है। ममी के पैर के पास दो एन्यूबिस नामक गीदड़ों को चित्रित किया गया है। ताबूत के दोनों तरफ किनारे की ओर पीले रंग के 'अंख़' (शुभ चिन्ह) को बनाया गया है। ताबूत के निचले हिस्से में चारों ओर से डिब्बे का रंग लाल है तथा पैर के पास पीले रंग के दो खम्भे बने हैं। इसके साथ दो 'यूरेआई' बनाये गये हैं। अन्दर की ओर इसमें किसी प्रकार का चित्रण नहीं है। कदाचित ऐसा लगता है कि, ताबूत को बाद में कभी फिर से रंग कर लेप किया गया किया है।

ममी : पूर्ण रूप से संरक्षित यह ममी किसी राजवंश परिवार की लगती है, क्योंकि इसे उस समय प्रचलित सबसे अच्छी ममी बनाने की प्रणाली (ममीफ़िकेशन) द्वारा बनाया गया है। यह चारों ओर से लिनेन की पट्टी में लपेटी हुई है। इस पर लिखे–लेख से ज्ञात होता है कि, यह 13 वर्ष की एक लड़की की ममी है, जिसका काल लगभग 600 ई. पू. है।

मिस्र की ममी
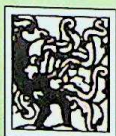
**राज्य संग्रहालय, लखनऊ**

बनारसी बाग, हज़रतगंज, लखनऊ–226001

फोन : 0522–2206157, फैक्स : 2206158

ईमेल : statemuseumlucknow@gmail.com